# तेलुगु स्वयंशिक्षक

प्रकाशक

क्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा

मद्रास

हिन्दी प्रचार पुस्तकमाला, पुष्प 30

# तेलुगु स्वयंशिक्षक

लेखक

पं. हृषीकेश शर्मा

प्रकाशक

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा

मद्रास

प्रथम संस्करण :
चौथा पुनर्मुद्रण
मार्च, 1960
3

दाम रु. 0·75 न. पै.
(सर्वाधिकार स्वरक्षित)

O. No. 300
मुद्रक : हिन्दी प्रचार प्रेस, त्यागरायनगर, मद्रास-17

# भूमिका

भारतवर्ष में राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा बंगला के बाद आन्ध्र भाषा का ही स्थान है। उसमें अमूल्य, गंभीर तथा सरस साहित्य है। उसके माधुर्य की प्रशंसा मुक्तकण्ठ से विदेशी लोग भी करते हैं। यद्यपि यहाँ के लोग भी हज़ारों की संख्या में हिन्दी सीख चुके हैं, सीख रहे हैं और परस्पर हिन्दी में व्यवहार भी करते हैं, फिर भी व्यापारी वर्ग और यात्री-समुदाय की तेलुगु, तमिल आदि भाषाएँ सीखने की अधिक इच्छा रहने से आपस के लेन-देन वग़ैरह करने में यह पुस्तक बहुत सहायक होगी।

इस पुस्तक में रोज़ काम-काज में—आपस के व्यवहार में—आनेवाली बातचीत के उपयुक्त छोटे-छोटे वाक्यों और तेलुगु के मुख्य-मुख्य व्याकरण के आवश्यक अंशों के साथ अभ्यास-पाठ दिये गये हैं। हमें पूर्ण विश्वास है, जो भाई इस पुस्तक को श्रद्धा से पढ़ेंगे वे आसानी से तेलुगु रीडर, कथा-कहानियाँ समझने में समर्थ हो जाएँगे। पुस्तक के अन्त में तेलुगु के स्वर, व्यंजन, और उनकी मात्राएँ दी गयी हैं। हम एक भारतलिपि—देवनागरी—के द्वारा मद्रास प्रांत की भाषाओं, तमिल, तेलुगु आदि को सिखाना चाहते हैं जिससे समस्त भारत में एक लिपि का प्रश्न शीघ्र हल हो जाय। तेलुगु लिपि का उच्चारण नागरी लिपि के उच्चारण से कोई भेद नहीं रखता। लेकिन संयुक्ताक्षर

लिखने में जैसी सरलता नागरी में है वैसी तेलुगु तथा अन्य भाषाओं में नहीं है। इस पुस्तक में तेलुगु की पूरी वर्णमाला सिखाने का उद्योग नहीं किया गया है।

श्रद्धेय श्री पं. हृषीकेश शर्माजी ने इस किताब को बड़े अच्छे ढंग से तैयार किया है। पाठकों से प्रार्थना है कि वे इस पुस्तक की सहायता से तेलुगु साहित्य के उपवन में प्रवेश कर उसका पूरा आनंद उठावें।

इस पुस्तक को और भी उपयोगी बनाने के लिए पाठक जो सलाह व सूचना भेजेंगे उन्हें हम सहर्ष स्वीकार करेंगे।

—प्रकाशक

# तेलुगु स्वयंशिक्षक

सूचना—1. तेलुगु शब्द के अन्तिम ह्रस्व अकारान्त अक्षर का उच्चारण पूरा-पूरा व सस्वर करना चाहिए। हिन्दी शब्द के अंतिम ह्रस्व अक्षर के उच्चारण की तरह तोड़कर या स्वररहित नहीं।

## पहला पाठ—मॉदटि पाठमु

### पुरुषवाचक सर्वनाम

मैं - नेनु

हम - मेमु
हम लोग - मनमु

तू - नीवु

तुम - मीरु
आप - तामु, तमरु

वह - अतडु, वाडु, आयन
यह - इतडु, वीडु, ईयन
वह (स्त्री.) - आमॅ

वे - वारु (पु. तथा स्त्री.)
ये - वीरु (पु. तथा स्त्री.)

### वर्तमान काल

'हो - उण्डु' क्रिया के रूप

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उत्तम | हूँ - उन्नानु | हैं - उन्नामु |
| मध्यम | है - उन्नावु | हो - उन्नारु |
| प्रथम | है - उन्नाडु | हैं - उन्नारु |
| प्रथम (स्त्री०) | है - उन्नदि | हैं - उन्नारु |

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम | नेनु उन्नानु - मैं हूँ | मेमु उन्नामु - हम हैं |
| मध्यम | नीवु उन्नावु - तू है | मीरु उन्नारु - तुम हो |
| प्रथम | वाड्डु / अतड्डु / * आयन } उन्नाड्डु - वह है | तमरु उन्नारु - आप हैं<br>वारु उन्नारु - वे हैं |

आमॅ उन्नदि - वह (स्त्री) है ; वारु उन्नारु - वे हैं

**सूचना**—2. 'नीवु' यह नीचार्थक है। देवता, बालक, स्त्री, पुत्र, मित्र आदि के लिए इसका प्रयोग होता है। आपस के अतिपरिचय में भी इसका व्यवहार करते हैं। फिर भी बच्चों और साधारण नौकरों को छोड़कर बाकी के लिए 'मीरु' पद का ही प्रयोग करना चाहिए।

## कुछ क्रियाएँ

**सूचना**—3. हिन्दी में स्त्री-पुरुष के अनुसार क्रिया के रूपों में भेद हो जाता है। परंतु तेलुगु में वैसा नहीं होता। तेलुगु में अंग्रेज़ी भाषा की तरह व्यक्ति से जान सकते हैं कि वह स्त्री है या पुरुष। केवल 'आमॅ-वह (स्त्री.)' इस एकवचन को छोड़ क्रियाओं के लिंग में कोई परिवर्तन नहीं होता।

**सूचना**—4. हिन्दी क्रियाओं में जैसे अंत में 'ना' लगा रहता है वैसे ही तेलुगु में 'ट' लगा रहता है। जैसे—

* 'आयन' सामान्य और सम्मान-सूचक पद है।

आना - वच्चुट
जाना - वॅळ्ळुट, पोवुट
बोलना - माटलाडुट
खाना - तिनुट
बैठना - कूर्चुण्डुट
सीखना - नेर्चुकॉनुट
ठहरना - आगुट
पढ़ना - चदुवुट
लिखना - व्रायुट
पीना - त्रागुट
सोना - निद्रपोवुट
उठना - लेचुट
सुनना - विनुट
चलना - नडचुट

सूचना—5. इन क्रियाओं के अन्त में जो 'ट' अक्षर है वह हटा दिया जाता है, जैसे हिन्दी में 'ना'। हिन्दी में वर्तमानकाल में जिस प्रकार 'ता' जोड़कर 'हो' क्रिया के ऊपर बतलाये हुए रूप मिला देने से वर्तमानकाल के रूप बन जाते हैं वैसे ही तेलुगु में हिन्दी के 'ना' के स्थान पर 'ता' की तरह 'ट' को हटाकर 'चुन्ना' जोड़ देने तथा 'उण्डु - हो' क्रिया के रूप मिला देने से उस धातु के वर्तमानकाल के रूप बन जाते हैं। नीचे हम 'आना - वच्चुट' क्रिया के वर्तमानकाल में रूप देते हैं। अच्छी तरह समझ लें।

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उत्तम | नेनु वच्चुचुन्नानु<br>मैं आता (आती) हूँ | मेमु वच्चुचुन्नामु<br>हम आते (आती) हैं<br>मनमु वच्चुचुन्नामु |

| | एकवचन | बहुवचन |
| --- | --- | --- |
| मध्यम | नीवु वच्चुचुन्नावु<br>तू आता (आती) है | मीरु वच्चुचुन्नारु<br>तुम आते (आती) हो<br>तमरु वच्चुचुन्नारु<br>आप आते (आती) हैं |
| प्रथम | वाडु, अतडु, आयन वच्चुचुन्नाडु<br>वह आता है<br>आमॅ वच्चुचुन्नदि<br>वह आती है | वारु वच्चुचुन्नारु<br>वे आते (आती) हैं |

**सूचना**—6. जीवजन्तु तथा अप्राणिवाचक नामों के साथ क्रिया के वर्तमानकाल में 'ट' निकालकर 'चुन्न' के साथ प्रथम-पुरुष एकवचन में 'दि' और बहुवचन में 'वि' प्रत्यय लगाया जाता है; जैसे—घोड़ा आता है - गुर्रमु वच्चुचुन्नदि.

घोड़े आते हैं - गुर्रमुलु वच्चुचुन्नवि.

## दूसरा पाठ—रॅण्डव पाठमु

### अभ्यास-वाक्य—1

1. निम्नलिखित वाक्यों को हिन्दी में लिखिये :—

(1) नेनु व्रायुचुन्नानु. मेमु व्रायुचुन्नामु. नेनु कूर्चॉनुचुन्नानु. मेमु कूर्चॉनुचुन्नामु. नेनु विनुचुन्नानु. मेमु विनुचुन्नामु. नेनु आगुचुन्नानु. मेमु आगुचुन्नामु. नेनु तिनुचुन्नानु. मेमु तिनुचुन्नामु.

(2) नीवु पोवु (वॅळ्लु) चुन्नावु. मीरु पोवु (वॅळ्लु) चुन्नारु. तमरु पोवुचुन्नारु. नीवु विनुचुन्नावु. मीरु विनुचुन्नारु. नीवु निद्र-पोवुचुन्नावु. मीरु निद्रपोवुचुन्नारु. नीवु त्रागुचुन्नावु. मीरु त्रागु-चुन्नारु. नीवु लेचुचुन्नावु. तमरु लेचुचुन्नारु. मीरु लेचुचुन्नारु.

(3) अतड्डु चदुवुचुन्नाड्डु. वारु चदुवुचुन्नारु. आमॅ चदुवु-चुन्नदि. आयन आगुचुन्नाड्डु. वारु आगुचुन्नारु. वाड्डु नेर्चुकॉनु चुन्नाड्डु. वारु नेर्चुकॉनुचुन्नारु. अतड्डु माटलाड्डुचुन्नाड्डु. वारु माटलाड्डुचुन्नारु. आमॅ नड्डुचुचुन्नदि. वारु नड्डुचुचुन्नारु. गुर्रमुलु (घोड़े) आगुचुन्नवि.

2. नीचे लिखे वाक्यों को तेलुगु में लिखिये:—

वह लिखती है। वे जाती हैं। वह जाता है। मैं जाता हूँ। हम जाते हैं। आप सीखते हैं। आप सीखती हैं। घोड़ा जाता है। तू ठहरती है। तुम बैठते हो। आप सोते हैं। मैं बैठता हूँ। हम खाते हैं। हम चलते हैं। वह पीती है। मैं सोती हूँ। वे ठहरते हैं। हम बोलते हैं। घोड़ा बैठता है। घोड़े चलते हैं।

## तीसरा पाठ—मूडव पाठमु

| | |
|---|---|
| हाँ - अवुनु, औनु | न, नहीं - लेदु, कादु |
| जी हाँ - औनण्डि | यहाँ, इधर - इक्कड, इच्चट |
| अब - इप्पुड्डु | वहाँ, उधर - अक्कड, अच्चट |
| तब - अप्पुड्डु | कहाँ, किधर - ऍक्कड, ऍच्चट |

कब - ऍप्पुडु
कैसे - ऍट्लु
खूब - बागा
हमेशा - ऍल्लप्पुडु ( सदा )
बहुत - चाला
ठीक - सरिगा
फिर - तिरिगि, पिम्मट
ऐसे - ईविधमुगा, इट्लु
बस - चालु
रोज़, प्रतिदिन - प्रतिदिनमु
वैसे - आ विधमुगा, अट्लु
पानी - नीरु
दूध - पालु
रोटी - रॉट्टि
भात - अन्नमु
काम - पनि
किताब - पुस्तकमु

क्या - एमि ?
क्यों - ऍन्दुकु ?
अभी - इप्पुडे
कम - तक्कुव
बड़ा - पॅद्द
छोटा - चिन्न
आज - नेडु
कल (आनेवाला) - रेपु
कल (गया दिन) - निन्न
परसों (आनेवाला) - ऍल्लुण्डि
परसों (गया दिन) - मॉन्न
भोजन, खाना - भोजनमु
मेज़ - बल्ल
कुर्सी - कुर्ची
भीतर, अन्दर - लोपल
बाहर - बयट
जल्दी - त्वरगा, शीघ्रमुगा

## कुछ क्रियाएँ

चेयुट - करना
तयारुचेयुट - तैयार करना, बनाना

नेर्पुट - सिखाना
इच्चुट - देना

परिगॆत्तुट - दौड़ना

चूचुट - देखना

तीसिकॉनिवच्चुट, तॆच्चुट - लाना

तीसुकॉनुट - लेना

तॆलुसुकॉनुट - जानना

निलबड्डुट, निलुचुट - खड़ा होना

## अभ्यास-वाक्य—2

वह क्या करता है? - वाड्डु एमि चेयुचुन्नाड्डु?

वह सीखता है - वाड्डु नेर्चुकॉनुचुन्नाड्डु.

लक्ष्मी क्या सीखती है? - लक्ष्मि एमि नेर्चुकॉनुचुन्नदि.

वह हिन्दी सीखती है - आमॆ हिन्दी नेर्चुकॉनुचुन्नदि.

तुम कौन हो? - मीरु एवरु?

मैं गोपालकृष्ण हूँ - नेनु गोपालकृष्णुडनु.

तुम क्या करती हो? - मीरु एमि चेयुचुन्नारु? (स्त्री०)

मैं दूध पीती हूँ - नेनु पालु त्रागुचुन्नानु. (स्त्री०)

वे तेलुगु क्यों सीखते हैं? - वारु तेलुगु ऍन्दुकु नेर्चुकॉनुचुन्नारु?

रुक्मिणी क्या खाती है? - रुक्मिणि एमि तिनुचुन्नदि?

वह भात खाती है – आमॆ अन्नमु तिनुचुन्नदि.

तुम क्या पढ़ते हो? – मीरु एमि चदुवुचुन्नारु?

हम महाभारत पढ़ते हैं - मेमु महाभारतमु चदुवुचुन्नामु.

आप क्या लिखते हैं? - तमरु एमि व्रायुचुन्नारु?

मैं नागरी लिखता हूँ - नेनु नागरी व्रायुचुन्नानु.

वे कहाँ जाते हैं? - वारु ऍक्कडिकि वॆळ्ळु (पोवु) चुन्नारु?

वे कलकत्ता जाते हैं - वारु कलकत्ता पोवुचुन्नारु.

वे यहाँ क्यों बैठते हैं? - वारु इक्कड एॅन्दुकु कूर्चॉनुचुन्नारु?
राधा कौन-सी भाषा बोलती है? - राधा ए भाष माटलाडुचुन्नदि.
वह संस्कृत बोलती है - आमॅ संस्कृतमु माटलाडुचुन्नदि.
आप अब क्यों सोते हैं? - तमरु इप्पुडु एॅन्दुकु निद्रपोवुचुन्नारु?
हम उठते हैं - मेमु लेचुचुन्नामु.

## चौथा पाठ—नाल्गव पाठमु

### अभ्यास-वाक्य—3

वह बड़ा धनवान (दौलतमन्द) है - वाडु गॉप्प धनवन्तुडु (डब्बु गलवाडु).
कमरा खाली है - गदि खालीगा उन्नदि.
वह मेरी टोपी है - अदि ना टोपी.
हवा बहुत गरम है - गालि चाला वेडिगा उन्नदि.
आसमान साफ़ है / आकाश स्वच्छ है - आकाशमु स्वच्छमुगा उन्नदि.
यह पानी मैला है - ई नीरु मुरिकिगा उन्नदि.
वह ग़रीब है - वाडु बीदवाडु.
वह (स्त्री०) बीमार है - आमॅ जब्बुगा उन्नदि.
यह घर मेरा है - ई इल्लु नादि (इदि ना इल्लु).
वह मेरा मित्र है - आयन ना स्नेहितुडु.
यह कपड़ा नया है - ई बट्ट क्रॉत्तदि.
यह नया घर है - इदि क्रॉत्त इल्लु.

यह बहुत पुराना है - इदि चाला पातदि.

उधर कौन है? - अक्कड ऍवड्डु उन्नाड्डु?

हिन्दी भाषा बड़ी सरल है - हिन्दी भाष चाला तेलिक.

वह क्या है? - अदि एमि?

मेरा नाम कैलाशचंद्र है - ना पेरु कैलासचन्द्रुड्डु.

वह मेरा नौकर है - वाड्डु ना नौकरु.

मैं बहुत भूखा हूँ - नेनु चाला आकलिगा उन्नानु.

वह मूर्ख है - वाड्डु मूर्खुड्डु.

वह बात बहुत ख़राब है - आ माट चाला चॅड्डदि.

वह (स्त्री०) बहुत ख़राब है - आमॅ चाला चॅड्डदि.

लड़का पढ़ता है - पिल्लवाड्डु चदुवुचुन्नाड्डु.

वह सुस्त नहीं है - वाड्डु सोमरि काड्डु.

हम यहाँ बड़े चैन से हैं - मेमु इक्कड चाला आनन्दमुगा उन्नामु.

यह ईमानदार मनुष्य है - वीड्डु नम्मकमुगलवाड्डु.

वह बड़ा लायक़ आदमी है - अतड्डु चाल योग्युडैन मनुष्युड्डु.

वह चोर है - वाड्डु दॉङ्ग.

मैं दौलतमंद नहीं हूँ - नेनु धनवन्तुडनु कानु.

वे तैयार नहीं हैं - वारु सिद्धमुगा लेरु.

वह लड़का होशियार नहीं है - आ बालुड्डु तॅलिविगलवाड्डु काड्डु.

वह मेरा भाई नहीं है - वाड्डु ना सोदरुड्डु काड्डु.

भारतवर्ष हमारी जन्मभूमि है - भरतखण्डमु मन जन्मभूमि.

मेरा नौकर बड़ा होशियार है - ना नौकरु चाला तॅलिविगलवाड्डु.
ये चीज़ें बहुत सस्ती हैं - ई वस्तुवुलु चाल चवुकगा उन्नवि.
वे काम में लगे हैं - वारु पनिलो उन्नारु.
हमारा घर यहाँ से बहुत दूर है - मा इल्लु इक्कडनुंडि चाला दूरमु.
उसका घर मेरे घर के सामने है - वानि इल्लु ना इण्टिकि ऍदुरुगा उन्नदि.
वह बड़ा व्यापारी है - आयन गॉप्प वर्तकुडु.
यह कमरा बहुत छोटा है - ई गदि चाला चिन्नदि.
रामदास घर में है - रामदासु इण्टिलो उन्नाडु.
पुस्तक मेज़ पर है - पुस्तकमु बल्लमीद उन्नदि.
ये लड़कियाँ बहुत सुन्दर हैं - ई बालिकलु चाला अन्दमुगा उन्नारु.
यह रास्ता लंबा है - ई रोड्डु चाला पॉडुगुगा उन्नदि.
वे मेरे पिता हैं - आयन ना तण्ड्रि.
यह ठंडा पानी है - इवि चल्लनि नीरु.
वह (स्त्री०) बड़ी मालदार है - आमॅ गॉप्प धनवन्तुरालु.
वह नदी गहरी है - ई नदि लोतुगा उन्नदि.
वह (स्त्री०) बहुत नेक है - आमॅ चाला मंचिदि.
उनका घोड़ा बहुत तेज़ दौड़ता है - वारि गुर्रमु चाला वेगमुगा परिगॅत्तुचुन्नदि.
यह लड़की बहुत बदसूरत है - ई पिल्ल चाल अंदविहीनमैनदि.
यह आदमी प्यासा है - ई मनुष्युडु दाहमुगा उन्नाडु.

हमारे देश में बहुत लोग ग़रीब हैं - मन देशमुलो चालमंदि जनलु बीद्वारु.

घी बहुत महँगा है - नॅय्यि चाला प्रियमुगा उन्नदि.

वे हमारे शिष्य हैं - वारु मा शिष्युलु.

बड़ा लड़का झगड़ता है - पॅद्द पिल्लवाडु जगडमु चेयचुन्नाडु.

मैं प्यासा हूँ - नाकु दाहमुगा उन्नदि.

## शब्द-संग्रह

शिष्य - शिष्यलु (बहु०)

घी - नॅय्यि

महँगा - प्रियमु

सस्ता - चवुक

ग़रीब - बीद

सौदागर - वर्तकुडु

लंबा - पॉड्डगु

लायक़ - योग्युडु

होशियार - तॅलिविगल

गरम - वेडि

भूखा - आकलिगा उन्न

नया - क्रॉत्त

कपड़ा - वस्त्रमु, बट्ट

अच्छा - मंचि

बुरा - चॅड्डु

प्यासा - दाहमुगल

भार्या, ज़ोरू - पॅण्ड्लमु

गहरा - लोतु

कमरा - गदि

ईमानदार - नम्मकमुगल

चोर - दॉङ्ग

सामने - ऍदुट

ठंडा - चल्लनि

सुस्त - सोमरि

पुराना - पात

घर - इल्लु

## पाँचवाँ पाठ—ऐदव पाठमु

### अभ्यास-वाक्य—4

क्या आप पानी पीते हैं ? - मीरु नीरु त्रागुचुन्नारा ?

नहीं, मैं दूध पीता हूँ - लेदु, नेनु पालु त्रागुचुन्नानु.

कौन दूध देता है ? - ऎवड्डु पालु इच्चुचुन्नाड्डु ?

गोपाल दूध देता है - गोपालुड्डु पालु इच्चुचुन्नाड्डु.

क्या वह अभी लाता है ? - वाड्डु इप्पुडे तीसुकॉनि वच्चुचुन्नाडा ?

हाँ, वह अभी लाता है - अवनु, वाड्डु इप्पुडे तीसुकॉनि वच्चुचुन्नाड्डु.

तुम यहाँ आओ - मीरु इक्कडिकि रण्डि.

मैं काम करता हूँ - नेनु पनि चेयुचुन्नानु.

वह फिर क्यों दौड़ता है ? - वाड्डु तिरिगि ऎन्दुकु परिगॆत्तुचुन्नाड्डु ?

वह अब दूध नहीं लेता है - वाड्डु इप्पुड्डु पालु पुच्चुकॉनुटलेदु.

तू (स्त्री०) क्या देखती है ? - नीवु एमि चूचुचुन्नावु ?

क्या आप अभी तक सोते हैं ? - तमरु इप्पटिवरकु निद्रपोवुचुन्नारा ?

मैं अब नहीं सोता हूँ - नेनु इप्पुड्डु निद्रपोवुटलेदु.

मैं ख़ूब चलता हूँ - नेनु बागा नड्डुचुचुन्नानु.

अब मैं यहाँ थोड़ी देर ठहरता हूँ - इप्पुड्डु नेनु इक्कड कॉञ्चॆमुसेपु आगुचुन्नानु.

आज तुम ठीक नहीं बोलते हो - नेड्डु मीरु सरिगा माटलाड्डुटलेदु.

गोपाल फिर क्यों ऐसा करता है ? - गोपालुड्डु तिरिगि ऎन्दुकु इट्लु चेयचुन्नाड्डु ?

राधाकृष्णजी रोज़ तेलुगु सीखते हैं - राधाकृष्णय्यगारु प्रतिदिनमु तेलुगु नेर्चुकॉनुचुन्नारु.

भाई! तुम ऐसा करो - सोदरा! नीवु इट्लु चेयुमु.

कल मत आओ; परसों आओ - रेपु रावद्दु; ऍल्लुण्डि रम्मु.

अब आप दूध पीजिये - इप्पुडु तमरु पालु त्रागण्डि.

वह ठीक नहीं है - अदि सरिगा लेदु.

अब बस कीजिये - इप्पुडु चालुनण्डि (बोलचाल में 'चालण्डि').

## छठा पाठ - आरव पाठमु

### अभ्यास-वाक्य—5

मैं नहीं जानता<br>मुझे नहीं मालूम } नाकु तॅलियदु.

मैं बाहर जाता हूँ - नेनु बयिटिकि पोवुचुन्नानु.

वे अब यहाँ से जाना चाहते हैं - वारु इप्पुडु इक्कडनुंडि वेळ्ळगोरुचुन्नारु.

मैं बाहर जाना चाहता हूँ - नेनु बयटिकि वेळ्ळगोरुचुन्नानु.

वह कहाँ से आता है? अतडु ऍक्कडनुण्डि वच्चुचुन्नाडु?

वे अख़बार पढ़ते हैं - वारु वार्तापत्रिक चदुवुचुन्नारु.

ये आदमी उधर क्यों जाते हैं? - ई मनुष्युलु अक्कडकि ऍन्दुकु पोवुचुन्नारु?

मेरा छोटा भाई काशी जा रहा है - ना तम्मुडु काशी पोवुचुन्नाडु.

मुझे पानी चाहिए - नाकु नीरु कावलॅनु.

तुम ठंडा पानी पीते हो - मीरु चल्लनि नीरु त्रागुचुन्नारु.

वह इस घर में रहता है - अतडु ई इण्टिलो निवसिंचुचुन्नाडु.

तुम बहुत धीरे बोलते हो - मीरु चाला मॅल्लगा माटलाडुचुन्नारु.

बालक रोता है - पिल्लवाडु एड्चुचुन्नाडु.

मैं उन्हें जानता हूँ - नेनु आयननि एरुगुदुनु.

मैं यहाँ से जाना चाहता हूँ - नेनु इक्कडनुण्डि पोगोरुचुन्नानु.

हम सुबह 5 बजे उठते हैं - मेमु प्रातःकालमु ऐदु गंटलकु लेचुचुन्नामु.

हम सब मैदान में फुटबॉल खेलते हैं - मेमन्दरमु मैदानमुलो बंति आट आडुचुन्नामु.

वह झूठ बोलता है - वाडु अबद्धमु माटलाडुचुन्नाडु.

मैं प्रतिदिन 5 घंटे काम करता हूँ - नेनु प्रतिदिनमु ऐदु घंटलु पनि चेयुचुन्नानु.

आप बहुत जल्दी लिखते हैं - तमरु चाल त्वरगा व्रायुचुन्नारु.

वे हिन्दी सिखाते हैं - वारु हिन्दी नेर्पुचुन्नारु.

आप कब आये? - तमरु ऍप्पुडु वच्चितिरि?

वह हमेशा देर से आता है - अतडु एप्पुडु आलस्यमुगा वच्चुचुन्नाडु.

राधा गीत गाती है - राधा पाट पाडुचुन्नदि.

पानी बरसता है, हम बाहर नहीं जाते - वान कुरियुचुन्नदि, मेमु बयिटिकि वॅळ्ळमु.

मैं नहीं जानता<br>मुझे नहीं मालूम } नाकु तॅलियदु.

वह अपने बड़े भाई के साथ बंबई में रहता है - आयन तन अन्नतो कूडा बॉम्बायिलो निवसिंचुचुन्नाडु.

मेरे शिक्षक इस मकान में रहते हैं - ना उपाध्यायुलु ई इण्टिलो उण्टुन्नारु.

हम भोजन कर रहे हैं - मेमु भोजनमु चेयुचुन्नामु.

तुम घर साफ़ कर रहे हो - मीरु इल्लु शुभ्रपरचुचुन्नारु.

हम चिट्ठी लिख रहे हैं - मेमु जाबु व्रायुचुन्नामु.

वह अच्छी पुस्तकें पढ़ती है - आमॅ मंचि ग्रंथमुलु चदुवुचुन्नदि.

तू कितने बजे नहाता है? - नीवु ऍन्नि गंटलकु स्नानमु चेयुचुन्नावु?

वे मुझे तेलुगु सिखाते हैं - वारु नाकु तेलुगु नेर्पुचुन्नारु.

सीतादेवीजी नित्य दो घंटे श्रीमद्भागवत पढ़ती है - सीतादेविगारु नित्यमु रॅण्डु गंटलु श्रीमद्भागवतमु चदुवुचुन्नारु.

मैं कल अपने गाँव जाता हूँ - नेनु रेपु ना ऊरिकि पोवुचुन्नानु.

महालक्ष्मी अपने पति को पत्र लिखती है - महालक्ष्मी तन भर्तकु जाबु व्रायुचुन्नदि.

मेरा छोटा भाई अमेरिका जाता है - ना तम्मुडु अमेरिका देशमुनकु पोवुचुन्नाडु.

वह सच बोलता है - वाडु निजमु माटलाडुचुन्नाडु.

## सातवाँ पाठ—एडव पाठमु

### विध्यर्थक

सूचना—7. धातु के साथ मध्यमपुरुष एकवचन में आशीर्वाद, शाप, प्रार्थना और विधि में 'मु', बहुवचन में 'अण्डि' या 'डु' प्रत्यय लगाते हैं।

उदाहरण :—

आशी० { 1. तू भाग्यवान हो - नीवु भाग्यवन्तुडवगुमु.
2. तुम भाग्यवान होओ - मीरु भाग्यवन्तुलुकण्डि. }

शाप { 1. तू बांझ हो - नीवु वंध्यवगुमु.
2. तुम बांझ होओ - मीरु वंध्यलु अगुडु. }

प्रार्थना { 1. तू मेरा यह काम कर - नीवु नाकु ई पनि चेयुमु.
2. तुम मेरा यह काम करो - मीरु नाकु ई पनि (कार्यमु) चेयुडु (चेयण्डि). }

सूचना—8. 'वच्चु - आ' का विध्यर्थक 'रम्मु' हो जाता है। तेलुगु में एकवचन 'नीवु - तू' कर्ता होने पर क्रियापद का 'ट' निकालकर केवल धातुरूप कहने से विधि वाक्य बन जाता है; जैसे—चदुवुट, - पढ़ना, तू पढ़ - नीवु चदुवु, या फिर धातु के अन्त में 'मु' जोड़ देते हैं; जैसे—नीवु चदुवुमु - तू पढ़।

साधारणतः 'मीरु - तुम' का ही प्रयोग हिन्दी के अनुसार होना चाहिए।

'नीवु' पद का प्रयोग देवता, भाई, बहन, पत्नी, मित्र, नौकर आदि के लिए किया जाता है। यहाँ तक कि माता-पिता और बड़े भाई के लिए भी 'नीवु' का प्रयोग प्यारा समझा जाता है। बड़ों के साथ सम्मान के लिए 'तमरु-आप' या 'मीरु-तुम' का प्रयोग कर क्रिया-पद के अन्त में 'अण्डि' या 'युडु' लगा दीजिये। नीचे अभ्यास के लिए विध्यर्थक वाक्य लिखे जाते हैं। उनका अच्छी तरह अभ्यास कर लीजिये :—

उदाहरण वाक्य

| | |
|---|---|
| करो - चेयुमु | कीजिये - चेयुडु, (चेयण्डि) |
| दो - इम्मु | दीजिये - इव्वण्डि |
| पिओ - त्रागुमु | पीजिये - त्रागुडु, त्रागण्डि |
| लो { तीसुकॉनुमु<br>पुच्चुकॉनुमु | लीजिये { तीसुकॉण्डि<br>पुच्चुकॉण्डि |
| यह काम करो - ई पनि चेयुमु | यह काम कीजिये - ई पनि चेयण्डि |
| मुझे एक पुस्तक दो - नाकु ऑक पुस्तकमु इम्मु. | मुझे एक पुस्तक दीजिये - नाकु ऑक पुस्तकमु इव्वण्डि. |
| थोड़ा शरबत पिओ - कोञ्चॅमु पानकमु त्रागुमु. | थोड़ा शरबत पीजिये - कॉञ्चॅमु पानकमु त्रागण्डि. |
| इधर आओ - इक्कडिकि रम्मु. | इधर आइये - इक्कडिकि रण्डि. |
| शान्त रहो - शान्तमुगा उण्डुमु. | शान्त होइये - शांतमुगा उण्डुडु. |

एक बात सुनो - ऑक माट विनुमु. एक बात सुनिये - ऑक माट विनण्डि.

एक पद्य बोलो - ऑक पद्यमु चॅप्पुमु. एक पद्य बोलिये - ऑक पद्यमु चॅप्पण्डि (चॅप्पुड्डु).

जल्दी जाओ - त्वरगा पॉम्मु. जल्दी जाइये - त्वरगा पॉण्डि.

**सूचना**—जब आप किसीके साथ सम्मानपूर्वक बातें करें या प्रार्थना करें तो 'विध्यर्थक' में क्रिया के साथ 'अण्डि' जोड़कर बोलें। नौकरों, बालकों या मित्रों के साथ साधारण प्रयोग करें।

'वच्चुट - आना' क्रिया का रूप 'विध्यर्थक' में और 'वॅलनु - चाहिए' पद जोड़ने पर 'रा' हो जाता है; जैसे—

रम्मु - आओ; रावॅलनु - आना चाहिए।

शक्कर लाओ - चक्कॅर (पञ्चदार) तीसुकॉनि रम्मु.

चुप रहो - ऊरुकॉनुमु, निश्शब्दमुगा उण्डुमु.

इधर आओ - इक्कडकि रम्मु.

पास आओ - दग्गरकु रम्मु.

यह ले जाओ - इदि तीसुकॉनि पॉम्मु.

थोड़ा जल लाओ - कॉञ्चमु नीरु तीसुकॉनि रम्मु.

सावधान रहो - जाग्रत्तगा उण्डुमु.

घर जाओ - इण्टिकि पॉम्मु.

मेरी किताब लाओ - ना पुस्तकमु तीसुकॉनि रम्मु.

यह चिट्ठी ले जाओ - ई चीटि तीसुकॉनि पॉम्मु.

जल्दी आओ - त्वरगा वॅळ्ळुमु.

आहिस्ते (धीरे) बोलो - मॅल्लगा माटलाडुमु.

स्पष्ट (साफ़) पढ़ो - स्पष्टमुगा चदुवुमु.

चले जाओ - वॅळ्ळि पॉम्मु.

जल्दी घर जाओ - त्वरगा इण्टिकि पॉम्मु.

थोड़ा-सा पानी पी लो - कॉञ्चमु नीरु त्रागुमु.

दिया जलाओ<br>चिराग जलाओ } दीपमु वेलिगिंचुमु.

चिराग (दिया) बुझाओ - दीपमु आर्पुमु.

बत्ती कम करो - दीपमु तग्गिंचुमु.

मेरे कपड़े लाओ - ना बट्टलु तीसुकॉनि र्‌म्मु.

यहाँ मत खेलो - इक्कड आडवद्दु, (आडकुमु).

मेरी बात सुनो - ना माट विनुमु.

मेरे नौकर को जगाओ - ना नौकरुनि मेल्कॉल्पुमु.

दरवाज़ा खोलो - तलुपु तॅरुवुमु.

खिड़की बंद करो - किटिकि मूयुमु.

मेरे नौकर को बुलाओ - ना नौकरुनि पिलुवुमु.

वहाँ मत जाओ - अक्कडिकि पोवद्दु.

मुझे दिक़ मत करो - नन्नु इब्बन्दि पॅट्टवद्दु.

इधर मत खेलो - इक्कड आडवद्दु.

अपने कपड़े बदलो - मी बट्टलु मार्चुकॉनुडु.

उसे रहने दो - दानिनि उण्डनिम्मु.

चोर को पकड़ो - दॉङ्गनु पट्टुकॉनुमु.

इसे तैयार करो - दीनिनि तैयारु चेयुमु.

घण्टा बजाओ - गण्ट कॉट्टुमु.

शीघ्र स्नान करो } त्वरगा स्नानमु चेयुमु.
जल्दी नहाओ }

खिड़की खोलो - किटिकि तॅरुवुमु.

सो जाओ - निद्रपोम्मु.

गाड़ी को ठहराओ - बण्डि आपुमु.

सीधे जाओ - तिन्नगा रम्मु.

कुर्सी पर बैठो - कुर्चीमीद कूर्चॉनुमु.

अख़बार लाओ - वार्तापत्रिक तीसुकॉनि रम्मु.

अपने हाथ धोओ - मी चेतुलु कडुगुकॉनुडु.

अपने हाथ साफ़ करो - मी चेतुलु शुभ्रमु चेसिकॉनुडु.

अपनी आँखें बंद करो - मी कण्ड्लु मूसुकॉनुडु.

उसे मत खींचो - दानिनि लागवद्दु.

ठीक समय (वक्त) पर आओ - सरियैन समयमुनकु रम्मु.

उसे तोड़ डालो - दानिनि विरुगकॉट्टुमु.

उसे ज़ोर से ढकेलो - दानिनि गट्टिगा नॅट्टुमु.

मेरी तरफ़ मत देखो - ना वैपु चूडकुमु (चूडवद्दु).

तुरन्त जाओ - वॅण्टने पॉम्मु (त्वरगा वॅळ्ळुमु).

कपड़े पहनो - बट्टलु धरिंचुमु (वेसुकॉनुमु).

कुछ अच्छी पुस्तकें भेजो - कॉन्नि मंचि पुस्तकमुलु पंपुमु.

बाज़ार से काग़ज़ लाओ - बजारुनुंडि कागितमु तीसुकॉनि रम्मु.

नमूना बतलाओ - मादिरि चूपुमु.

उसको गालियाँ मत दो - वानिनि तिट्टकुमु (तिट्टवद्दु).

उस आदमी से पूछो - आ मनुष्युनि अडुगुमु.

अपने बेटे को हमारे घर भेजो - मी कॉडुकुनु मा इण्टिकि पम्पुमु.

थोड़ी देर के बाद आओ - कॉञ्चमु सेपु तरुवात रम्मु.

नाई (हज्जाम) को बुलाओ - मंगलिनि पिलुवुमु.

अपना काम करो - मी पनि चेसिकॉनुडु (देखो-चूडुमु).

आप मुझे क्षमा (माफ़) कीजिये - तमरु नन्नु क्षमिम्पुडु (क्षमिंचंडि).

उनको मेरे घर भेजो - वारिनि ना इण्टिकि पम्पुमु.

थोड़ी देर के लिए आप बाहर ठहरिये - कॉञ्चमु सेपु तमरु बयट
आगण्डि (उण्डण्डि).

मुझे मिठाई दो - नाकु मिठायि इम्मु.

गाड़ि को सीधे हांको - बंडि तिन्नगा तोलुमु.

थोड़ी देर उसके लिए ठहरो - कॉञ्चमु सेपु वानिकॉरकु आगुमु.

मेरी ग़लती ठीक करो - ना तप्पु सवरिंचुमु.

उसके घर आओ - वानि इण्टिकि रम्मु.

उसे खूंटी पर लटका दो - दानिनि चिलुककॉय्यकु तगिलिंचुमु.

इस ग़लती को सुधारो - ई तप्पु दिद्दुमु.

खाना पकाओ - अन्नमु वण्डुमु.

अपना सिर झुकाओ - नी तल वंचुमु.

आप अपनी ग़लती ठीक कीजिये - तमरु तम तप्पुनु सवरिंपुडु.

आटा गूंधो - पिण्डि पिसुकुमु.

हिसाब ठीक करो - लॅक्क सरिगा चूडुमु.

चिट्ठी पर टिकट लगाओ (चिपकाओ) - उत्तरमु मीद बिळ्ळ अण्टिचुमु.

यहाँ पर एक चटाई बिछाओ - इक्कड ऑक चाप परुचुमु.

एक सेर घी तोलो - ऑक सेरु नॅय्यि तूचुमु.

तीन पड़ी गेहूँ नापो - मूडु पलु गोधुमलु कॉलुवुमु.

पांच सेर सक्कर ख़रीदो - अयिदु सेर्लु चक्कॅर कॉनुमु.

और दो दर्जन केले हमारे लिए ले लो - इंका रॅण्डु डजनुलु अरटि पण्डूलु, माकॉरकु तीसुकॉनुमु.

ठण्ड बहुत है, ऊपर चादर ओढ़ो - चलि अधिकमुगा उन्नदि, पैन दुप्पटि कप्पुमु.

## आठवाँ पाठ—एनिमिद्व पाठमु

## निषेधार्थक

**सूचना**—10. निषेध (किसीको मना करने में ऐसा न करो या मत जाओ) आदि में मध्यम पुरुष में 'मु' और 'डु' के पहले 'कु' जोड़ दिया जाता है। या क्रियापद के अन्त में

'उ' का 'आ' करके 'वद्दु - मत' शब्द जोड़ने से निषेधार्थक बन जाता है।

**उदाहरण :—**

तू बैठ - नीवु कूर्चॉण्डुमु.

तुम बैठो - मीरु कूर्चॉण्डि.

आप बैठिये - तमरु (तामु) कूर्चॉण्डि.

तू मत बैठ - नीवु कूर्चोवद्दु. तू मत जा - नीवु वॅळ्ळकुमु.

तुम मत बैठो - मीरु कूर्चोवद्दु. तुम मत जाओ - मीरु वॅळ्ळकुड्डु.

आप मत बैठिये - तमरु कूर्चोवद्दु. आप मत जाइये - तमरु वॅळ्ळकुड्डु.

## कुछ निषेधार्थक वाक्य

उसको मत बुलाओ - वानिनि पिलुववद्दु.

शराब मत पिओ - सारायि त्रागवद्दु.

यहाँ मत बैठो - इक्कड कूर्चोवद्दु.

दरवाज़ा मत खोलो - तलुपु तॅरववद्दु.

वहाँ बार-बार मत जाओ - अक्कडकु माटि माटिकि पोवद्दु.

कल यहाँ मत आओ - रेपु इक्कडिकि रावद्दु.

आज मत जाओ - नेड्डु वॅळ्ळ (पो) वद्दु.

मत बोलो - माटलाडवद्दु.

ज़ोर से मत बोलो - बिग्गरगा (गट्टिगा) माटलाडवद्दु.

खिलखिलाकर मत हँसो - पकपक (नव्वकमु) नव्ववद्दु.

उसे मत मारो - वानिनि कॉट्टवद्दु.

उसे (उस स्त्री को) मत मारो - आमॅनु कॉट्टवद्दु.

धीरे मत पढ़ो - मॅल्लगा चद्ववद्दु.

ऐसा ख़राब काम मत करो - इट्टि चॅड्ड पनि चेयवद्दु.

जल्दी मत चलो - त्वरगा नडववद्दु.

## नौवाँ पाठ—तॉम्मिदव पाठमु

## प्रश्नार्थक अभ्यास-वाक्य—6

तमरु ऍवरु ? - आप कौन हैं ?

तमरु एमि पनि चेयुचुन्नारु ? - आप क्या काम करते हैं ?

तमरु ऍक्कड निवसिंचुचुन्नारु ? - आप कहाँ रहते हैं ?

मीरु एमि नेर्चुकॉनुचुन्नारु ? - तुम क्या सीखते हो ?

तमरु आयनकु जाबु व्रासिनारा ? - क्या आपने उनको चिट्ठी लिखी है ?

तमरु मद्रासु चूचिनारा ? - आपने मद्रास देखा है ?

मीवद्द (मीदग्गिर) ऍन्नि रूपायलु उन्नवि ? - तुम्हारे पास कितने रुपये हैं ?

तमवद्द एमि उन्नदि ? - आपके पास क्या है ?

तमरु ना लॅक्क तयारु चेसिनारा ? - आपने मेरा हिसाब तैयार किया है ?

तमरु ऍप्पुडु वच्चितिरि - आप कब आये ?

नेनु निन्न वच्चितिनि - मैं कल आया ।

तमरु वंट तयारु चेसिनारा ? - आपने रसोई तैयार की ?

तमरु अतनिकि ऍन्नि रूपायलु इच्चितिरि ? - आपने उसको कितने रुपये दिये ?

मीरु इक्कडकु निन्न वच्चितिरा ? - क्या तुम कल इधर आये ?

तमरु आयननु ऍक्कड चूचितिरि ? - आपने उन्हें कहाँ देखा ?

मीरु आमॅनु इक्कड चूचितिरा ? - क्या तुमने उस (स्त्री) को यहाँ देखा ?

तमरु इक्कड देनिकॉरकु वच्चियुन्नारु ? - आप इधर किसलिए आये हैं ?

मीरु एमि तीसिकॉनि वच्चिनारु ? - तुम क्या लाये हो ?

तमरु ऍक्कड बस चेयुदुरु ? - आप कहाँ ठहरेंगे ?

वंट सिद्धमुगा उन्नदा - क्या रसोई तैयार है ?

अवुनु, सिद्धमुगा उन्नदि - हाँ तैयार है ।

तमरु दीनिनि चदवगलरा ? - क्या आप इसे पढ़ सकते हैं ?

मीरु नातो कूडा वस्तारा ? - क्या तुम मेरे साथ आओगे ?

तमरु नाकु आ पुस्तकमु इस्तारा ? - क्या आप मुझको वह पुस्तक देंगे ?

तमरु ऍप्पुडु वॅळ्ळुदुरु ? - आप कब जाएँगे ?

तमरु दानिनि ऍप्पुडु तीसिकॉनि वस्तारु ? - आप उसे कब लेकर आएँगे ?

मीरु ऍन्नि गंटलकु तिरिगि वस्तारु ? - तुम कितने बजे वापस आओगे ?

तमरु नाकु जाबु ऍप्पुडु व्रायुदुरु ? - आप मुझको चिट्ठी कब लिखेंगे ?

मीरु पानकमु त्रागॅदरा ? - क्या तुम शरबत पिओगे ?

मीरु तॅलुगु माटलाडगलरा ? - क्या तुम तेलुगु बोल सकते हो ?

तमरु एमि चेयगलरु ? - आप क्या कर सकते हैं ?

तमरु एमि कोरुचुन्नारु ? - आप क्या चाहते हैं ?

मीकु एमि कावलॅनु ? - तुमको क्या चाहिए ?

मीरु ऍक्कडिकि पोवुचुन्नारु ? - तुम किधर जाते हो ?

तमरु ऍक्कडनुंडि वस्तुन्नारु ? - आप किधर से आते हैं ?

मीरु ऍन्नि गंटलकु आफीसुकु पोवुचुन्नारु ? - तुम कितने बजे दफ़्तर (को) जाते हो ?

मीरु ऍन्नि गंटलकु भोजनमु चेस्तुन्नारु ? - तुम कितने बजे खाना खाते हो ?

नेनु पदि गंटलकु भोजनमु चेस्तुन्नानु - मैं दस बजे खाना खाता हूँ ।

मीरु एमि चदुवुचुन्नारु ? - तुम क्या पढ़ते हो ?

मी आफीसु ऍक्कड उन्नदि ? - तुम्हारा आफ़िस कहाँ है ?

ना आफीसु तिरुवल्लिक्केणिलो उन्नदि - मेरा आफ़िस तिरुवल्लिक्केणि में है ।

मी तण्ड्रिगारु ऍक्कड उन्नारु ? - तुम्हारे पिताजी कहाँ है ?

मी भार्य (पॅण्डलामु) ऍक्कड उन्नदि ? - तुम्हारी स्त्री कहाँ है ?

तम अन्नगारु ऍक्कड उन्नारु ? - आपके बड़े भाई कहाँ हैं ?

मी तम्मुडु इक्कडने उन्नाड़ा? क्या तुम्हारा छोटा भाई इधर ही है?

तमकु एमि इष्टमु? - आपको क्या पसंद है?

मीकु अदि इष्टमा? - क्या तुमको वह पसंद है?

तम वृत्ति एमि? - आपका धंधा (पेशा) क्या है?

तमरु सौख्यमुगा उन्नारा? - आप अच्छे हैं?

तम (मी) पेरु एमि? - आपका (तुम्हारा) नाम क्या है?

तम तंड्रि पेरु एमि? - आपके पिता का क्या नाम है?

मी भार्य पेरु एमि? - तुम्हारी स्त्री का नाम क्या है?

वारु पक पक ऍन्दुकु नव्वुचुन्नारु? - वे खिलखिलाकर क्यों हँसते हैं?

तमरु ऍन्नि गंटलकु आफीसुकु पोवुचुन्नारु? - आप कितने बजे दफ़्तर जाते हैं?

तमरु ऍन्तमन्दि अन्नदम्मुलु? - आप कितने भाई हैं?

तमरु आफ़ीसुनुण्डि ऍन्नि घंटलकु वस्तुन्नारु? - आप दफ़्तर से कितने बजे आते हैं?

तम कार्यालयमुलो ऍन्तमन्दि मनुष्यलु पनि चेयचुन्नारु? - आपके दफ़्तर में कितने आदमी काम करते हैं?

तमरु आयन दग्गरकु पोवुचुन्नारा? - क्या आप उनके पास जाते हैं?

तमरु ऍन्नि गंटलकु निद्रपोवुचुन्नारु? - आप कितने बजे सोते हैं?

नेनु आरु गंटलु निद्रपोवुचुन्नानु - मैं छे घंटे सोता हूँ।

तमरु ऍट्लु उन्नारु? - आप कैसे हैं?

मीरु इक्कड एमि चूस्तुन्नारु ? - तुम इधर क्या देखते हो ?

तमरु इप्पुडु अंगडिकि पोवुचुन्नारा ? - क्या अब आप बाज़ार जाते हैं ?

तमरु इप्पुडु ऍक्कडिकि पोवुचुन्नारु ? - आप अभी किधर जाते हैं ?

तामु ऍट्लुन्नारु ? - आप कैसे हैं ?

मी सोदरुडु ऍट्लुन्नाडु ? - तुम्हारा भाई कैसा है ?

तम गदि ऍन्त पॉडुवु ? - आपका कमरा कितना बड़ा है ?

मी इल्लु ऍन्त पॅद्ददि ? - तुम्हारा घर कितना बड़ा है ?

तम इल्लु ऍन्त दूरमु ? - आपका घर कितनी दूर है ?

तमरु ऍन्नि सारुलु भोजनमु चेस्तुन्नारु ? - आप कितनी बार भोजन करते हैं ?

मीरु इक्कड एमि चूस्तुन्नारु ? - तुम यहाँ क्या देखते हो ?

तमरु ऍन्नि गंटलकु लेचुचुन्नारु ? - आप कितने बजे उठते हैं ?

वारु एमि अम्मुचुन्नारु ? - वे क्या बेचते हैं ?

तमरु एमि माटलाडुचुन्नारु ? - आप क्या बोलते है ?

तमरु एमि अडुगुचुन्नारु ? - आप क्या पूछते हैं ?

तमरु ऍन्दुक व्रायुचुन्नारु ? - आप किसलिए लिखते हैं ?

तमरु ऍन्दुकु इक्कडकु वस्तुन्नारु ? - आप क्यों इधर आते हैं ?

मी इल्लु ऍक्कड उन्नदि ? - तुम्हारा घर कहाँ है ?

तमरु ऍवरिनि पिलुस्तुन्नारु ? - आप किसको बुलाते हैं ?

तमरु ऍक्कड पनि चेयुचुन्नारु ? - आप कहाँ काम करते हैं ?

तमरु ना माट विण्टारा ? - आप मेरी बात सुनेंगे ?
अक्कडकु ऍप्पुडु पोवुदुरु (पोतारु) ? - वहाँ कब जाओगे ?

## दसवाँ पाठ—पदव पाठमु

### विशेषण

सूचना—11. विशेष्य अर्थात् संज्ञा के गुण को बतलानेवाला पद 'विशेषण' कहलाता है।

तेलुगु में (1) गुणवाचक (2) संख्यावाचक और (3) क्रिया-वाचक—इस प्रकार के तीन विशेषण हैं।

2. संज्ञा के किसी गुण को बतलानेवाले विशेषण गुण-वाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे—तॅल्ल - सफ़ेद, नल्ल - काला, मंचि - अच्छा, पॅद्द - बड़ा, चिन्न - छोटा।

2. विशेषणों के रूप में कोई विशेष फेरफार नहीं होता। हिन्दी की तरह इसमें विशेष्य के लिंग-वचन के अनुसार विशेषणों का कोई रूप-परिवर्तन नहीं होता; वे संज्ञा के पहले प्रयुक्त होते हैं। पॅद्द चॅरुवु - बड़ा तालाब, चिन्न पुस्तकमु - छोटी पुस्तक, नल्ल गुर्रमु - काला घोड़ा, तॅल्ल कागितमु - सफ़ेद काग़ज़, चिन्न पिल्लवाडु - छोटा लड़का, पॅद्द राणि - बड़ी रानी, गॉप्प मनुष्युडु - बड़ा आदमी।

'गोप्प' और 'पॅद्द' दोनों का अर्थ 'बड़ा' होता है, पर पॅद्द का अर्थ शकल-सूरत तथा भारीपन से है और 'गॉप्प' का गुण से।

3. अकारान्त विशेषण के अन्त में कभी-कभी 'नि' भी जोड़ देते हैं, जैसे—नल्ल - नल्लनि, तॅल्ल - तॅल्लनि, चिन्न-चिन्ननि, चक्क-चक्कनि (सुन्दर)। उदाहरण :—चक्कनि बालुडु - सुन्दर लड़का, नल्लनि आवु - काली गाय, तॅल्लनि कागितमु - सफ़ेद काग़ज़।

4. जिन विशेषणों के अन्त में 'मु' होता है उनके बाद विशेष्य (संज्ञा) आवे, तो 'मु' का 'पु' या 'म्पु' हो जाता है। जैसे—सरसमु—सरस, माट—बात = सरसपु माट, सरसम्पु माट - सरस बात।

5. कहीं-कहीं विशेषण के साथ 'ऐन' शब्द भी जोड़कर संधि कर देते हैं। जैसे—सरसमु + ऐन - सरसमैन ; मुख्यमु + ऐन - मुख्यमैन. मुख्यमैन समाचारमु - मुख्य समाचार ; विशेषमैन ज्ञानमु - विशेष ज्ञान ; सरसमैन काव्यमु - सरस काव्य ; मधुरमैन फलमु - मीठा फल।

6. संख्यावाचक विशेषण के 3 भेद हैं—

(1) संख्यार्थक (2) संख्येयार्थक (3) पूरणार्थक।

रॅण्डु (दो), मूडु (तीन) इत्यादि संख्येयार्थक विशेषण हैं।

—इद्दरु (दो), मुग्गुरु (तीन) इत्यादि संख्येयार्थक विशेषण पुलिंग, स्त्रीलिंग दोनों में आता है। जैसे—इद्दरु मनुष्युलु - दो मनुष्य, मुग्गुरु स्त्रीलु - तीन औरतें, नलुगुरु बालुरु - चार लड़के

इत्यादि। घोड़ा, हाथी, गाय, बैल आदि के साथ इस विशेषण का प्रयोग नहीं होता।

मॉदटि (पहला), रॅण्डव (दूसरा), मूडव (तीसरा) इत्यादि पूरणार्थक विशेषण हैं। रॅण्डव दिनमु - दूसरा दिन, मूडव श्लोकमु - तीसरा श्लोक, नाल्गव पाठमु - चौथा पाठ इत्यादि।

7. 'इन', 'चुन्न', 'गल', 'ण्डु' इत्यादि प्रकार के प्रत्यय क्रिया के साथ जोड़ने से क्रियावाचक विशेषण बन जाता है। जैसे—पढ़ना - चदुवुट, पढ़ता हुआ - चदुवुचुन्न, पढ़ता हुआ आदमी - चदुवुचुन्न मनुष्युड्डु, लिखता हुआ - व्रायुचुन्न, सोता हुआ - निद्र पोवुचुन्न.

—'चुन्न' के साथ कभी-कभी 'अट्टि' प्रत्यय भी लगा देते हैं। जैसे—कॉट्टुचुन्नट्टि - मारता (पीटता) हुआ, चदुवु-चुन्नट्टि - पढ़ता हुआ इत्यादि।

—भूतकाल में 'इन' को क्रिया के साथ जोड़ते हैं। जैसे—तिनिन - खाया हुआ, पोयिन - गया हुआ, चॅप्पिन - कहा, एड्चिन - रोया हुआ।

—यह और ये के लिए 'ई' तथा वह और वे के लिए 'आ' हो जाता है। जैसे—'यह' किताब - 'ई' पुस्तकमु, ये आदमी - ई मनुष्युलु, वह गाय - आ आवु, वे घोड़े - आ गुर्रमुलु.

जो - ए :—उदाहरण—जो लड़का - ए पिल्लवाड्डु, जो किताबें - ए पुस्तकमुलु, जो लड़कियाँ - ए बालिकलु.

| | |
|---|---|
| यह - ई | वह - आ |
| ये - ई | वे - आ |
| अच्छा - मंचि | बुरा - चॅड्ड |
| बड़ा - पॅद्द | छोटा - चिन्न |
| लम्बा - पॉडवैन | चौड़ा - वॅडल्पैन |
| ऊँचा - ऍत्तैन | नीचा - क्रिन्दैन |
| मीठा - तिय्यनि | कड़ुआ - चेदैन |
| मोटा - लावैन | पतला - सन्ननि |

## कुछ संज्ञाएँ

| | |
|---|---|
| इल्लु - घर | ग्राममु, ऊरु - ग्राम |
| पट्टणमु - शहर | कागितमु - काग़ज़ |
| चॅट्टु - पेड़ | पण्डु, फलमु - फल, मेवा |
| पॅट्टॅ - सन्दूक़, पेटी | कत्ति - चाकू, छुरी |

## अभ्यास-वाक्य—7

यह मकान बड़ा है - ई इल्लु पॅद्दद‍ि.

क्या वह काग़ज़ लंबा है? - आ कागितमु पॉडवैनदा?

नहीं, वह चौड़ा है - लेदु, अदि वॅडल्पुगा उन्नदि.

यह शहर अच्छा है - ई पट्टणमु मञ्चिदि.

वे घर ऊँचे हैं - आ इण्ड्लु ऍत्तुगा उन्नवि.

वह मीठा दूध लाता है - वाड्डु तिय्यनि पालु तॅच्चुचुन्नाड्डु.

आज रोटी बड़ी पतली है - नेड्डु रॉट्टॅ चाला सन्नगा उन्नदि.

वह किताब बहुत मोटी है - आ पुस्तकमु चाला लावुगा उन्नदि.
वह फल क्यों नहीं खाती है? - आमॅ पण्डु ऍन्दुकु तिनुट लेदु?
वह फल कड़ुवा है - आ पंडु चेदुगा उन्नदि.
इसे खाओ, यह मीठा है - दीनिनि तिनंडि, इदि तिय्यगा उन्नदि.
यह पेड़ मोटा है - ई चॅट्टु लावुगा उन्नदि.
नीग्रो लोग नाटे होते हैं - नीग्रोलु पॉट्टिगा उंदुरु.
राधा बुरी भाषा बोलती है - राध चॅड्ड भाष माटलाडुचुन्नदि.
ये घर बहुत छोटे हैं - ई इण्ड्लु चाला चिन्नवि.
यह गाँव बहुत अच्छा है - ई ग्राममु चला मंचिदि.
वह छोटी पेटी इधर लेकर आओ - आ चिन्न पॅट्टॅनु इक्कडिकि तीसुकॉनि रम्मु.

### ग्यारहवाँ पाठ—पदुनॉकण्डव पाठमु

## तेलुगु का लिंग-प्रकरण

1. हिन्दी में दो ही लिंग हैं किन्तु तेलुगु में तीन लिंग—पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग—हैं।

2. स्त्री, पुरुष आदि प्रदर्शक जाति-भेद को लिंग कहते हैं। तेलुगु भाषा में महत्, महती और अहमत्—के भेद से तीन लिंग हैं।

मनुष्यों और देवताओं में पुरुषबोधक नाम (राम, इन्द्र, सूर्य, रामनाथ, राघव इत्यादि) और उनके विशेषण 'महत्' कहलाते

हैं। स्त्रियों के नाम और उनके विशेषण 'महती' कहलाते हैं और जीवजन्तु, चौपाये, जड़ पदार्थ और उनके विशेषण 'अहमत्' कहलाते हैं। महत् वाचक शब्द पुंलिंग, महती वाचक शब्द स्त्रीलिंग और अहमत् वाचक शब्द नपुंसकलिंग होते हैं।

3. संस्कृत पदों का जो-जो लिंग नियत है वही लिंग तेलुगु में उन पदों के लिए है।

4. अकारान्त, उकारान्त, पुंलिंग (महत् वाचक) पदों के अन्त में 'डु' का यह प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे राम-रामुडु, कृष्ण - कृष्णुडु, देव - देवुडु, सूर्य - सूर्युडु, शंभु - शंभुडु, भाला लेकर लड़नेवाला - बल्लिदुडु.

5. इकारान्त पुंलिंग पदों में 'डु' नहीं लगता। जैसे—हरि, मुनि, ऋषि—हिन्दी की तरह।

6. कभी-कभी 'अहमत्' शब्दों को 'महत्' मानकर पुंलिंग प्रत्यय 'डु' लगाते हैं। जैसे—समुद्र (इसका साधारणतः 'समुद्रमु' रूप ही होता है।) समुद्रुडु, (मेघमु) मेघुडु, हिमवन्तुडु।

7. अकारान्त नपुंसक (अहमत्) शब्दों के अन्त में 'मु' जोड़ते हैं। जैसे—वन - वनमु, जल - जलमु, फल - फलमु, पुस्तक - पुस्तकमु, धन - धनमु।

8. जनमु - लोग और चुट्टमु - नातेदार आदि शब्द सदा नपुंसकलिंग के समान हैं।

9. तीनों (पुं. स्त्री. नपुं.) में उकारान्त शब्द के अन्त में

'वु' जोड़ा जाता है। जैसे—शंभु - शंभुवु, वधू - वधुवु, गुरु - गुरुवु, वस्तु - वस्तुवु.

10. दूत, दॉर (साहब), चरित्र, मूत (ढक्कन)। ये शब्द ऐसे ही बोले जाते हैं। इनमें डु, मु नहीं जोड़ते।

11. तेलुगु में महत्, महती इन दोनों भेदों को जानने के लिए तीन उपाय हैं—(1) पद-भेद (2) अन्त-भेद और (3) संज्ञा के पहले स्त्रीलिंग या पुंलिंग बोधक 'आडु' (स्त्री.) 'मग' (पु.) शब्द जोड़ने से वह संज्ञा स्त्रीलिंग या पुंलिंग बन जाती है। नीचे क्रमशः उदाहरण दिये जाते हैं।

## पद-भेद

| महत् | महती | महत् | महती |
|---|---|---|---|
| पुरुषुडु | स्त्री | पॅनिमिटि (पति) | पॅण्डलामु (भार्या) |
| पिता | माता | माम (ससुर) | अत्त (सास) |
| वरुडु | वधुवु | बाव (बहनोई) | वदिॅन (भौजाई) |

## अन्त-भेद

| | | | |
|---|---|---|---|
| ब्राह्मणुडु | ब्राह्मणि | पारुडु (ब्राह्मण) | पारुत (ब्रह्माणी) |
| नायकुडु | नायिक | वगलाडु | वगलाडि |
| जनकुडु | जननि | चॅलिकाडु (मित्र) | चॅलिकत्ते (सखी) |

## पूर्व में पद-संयोजन से लिंग

| | |
|---|---|
| मग बिड्ड (बच्चा) | आड बिड्ड (बच्ची) |
| मग पिल्लवाड्ड (बच्चा) | आड पिल्ल (बच्ची) |

## बारहवाँ पाठ—पंड्रेण्डव पाठमु

### विभक्ति (कारक) प्रकरण

1. प्रथमा विभक्ति—डु, मु, वु, लु, (ने)

2. द्वितीया विभक्ति—नि, नु, (को)

3. तृतीया विभक्ति—चेत, चे, तोड़, तो (से)

4. चतुर्थी विभक्ति—कै, कॉरकु (के लिए, के वास्ते)

5. पञ्चमी विभक्ति—नुंडि, नुंचि, वलन, कंटॅ, पट्टि (से)

6. षष्ठी विभक्ति—कि, कु, यॉक्क, लो, लोपल

'कि, कु' का अर्थ हिन्दी मुहावरे के अनुसार 'को' होता है और 'लो' और 'लोपल' का प्रयोग सप्तमी के 'में' इस अर्थ में होता है। केवल 'यॉक्क' का अर्थ ही 'का, के, की' होता है।

7. सप्तमी विभक्ति—अंदु, न (में)

**सूचना**—12. तो कूड - के साथ; वल्ल, वलन - से (के ज़रिये, के द्वारा) का अर्थ होता है। जैसे—राम के साथ - रामुनितो कूड, 'कंटॅ' अर्थ अपेक्षित है।

मेरे साथ - नातो कूड, उसके साथ - वानितो कूड.

मुझको - नाकु, हमको - माकु, हमसे, हमारे ज़रिये - मावल्ल

## तेलुगु विभक्तियों के बारे में कुछ जानने योग्य बातें

(1) संबोधन (हे, ओ, अरे) के बहुवचन में 'आरा' यह आगम होता है। जैसे—ओ रामुलारा! ओ बालुलारा! ओ मित्रुलारा! ओ महाजनुलारा! (इन पदों में आये हुए अन्त के रकार को थोड़ा झटका देकर दीर्घान्त पढ़िये। हिन्दी शब्दों की तरह उच्चारण नहीं होता।)

2. 'ऊ' जिसके पूर्व में न हो ऐसे 'डु' प्रत्ययान्त युक्त शब्द की द्वितीया, तृतीया आदि विभक्तियों के एक-वचन में 'डु' का लोप होकर उसके स्थान में 'नि' का आगम विकल्प से होता है। जैसे—रामुनिनि, रामुनि (द्वि०), रामुनिचेत, रामुचेत, शंभुनिनि, शंभुनि (द्वि०), शंभुनिचेत, शंभुचेत (तृ०)।

3. द्वितीयादि विभक्तियों के बहुवचन में पर रूप होने पर अंतिम वर्ण के उकार का अकार हो जाता है। रामुलु + नु = रामुलनु (द्वि० बहु०), रामुलु + चेत = रामुलचेत (तृ० ब०), बालुरु + चेत = बालुरचेत इत्यादि।

4. नि, नु—द्वितीया विभक्ति, जिन पुंलिंग शब्दों के अन्त में 'डु' लगता है वे, और इ, ई, ऐ अक्षर अन्तवाले शब्दों के एकवचन में 'नि' वर्ण जोड़ा जाता है। जैसे—रामुनिन्' शंभुनिन्, हरिनिन्, स्त्रीनिन्। इन्हें छोड़ और शब्दों में 'नु,

आता है। दॉरनु (साहब को), गुरुवुनु, विधातनु, वनमुर
रामुलनु, हरुलनु इत्यादि।

5. चेत, चे, तोड़, तो—तृतीया विभक्ति उ०—रामुनि चेत, रामुचेत, रामुलचेत, रामुलतोड़.

6. कै, कॉरकु—चतुर्थी विभक्ति—रामुनिकै, रामुकै रामुलकै, रामुनिकॉरकु, रामुलकॉरकु.

7. वलन, कॅंटॆ—पंचमी विभक्ति—रामुनिवलन, रामुलवलन

8. कि, कु, यॉक्क, लो, लोपल—षष्ठी विभक्ति—नी (तू) मी (तुम)—इन शब्दों को छोड़कर इकार, ईकार, ऐकारन्त शब्दों के एकवचन में 'कि' वर्ण आता है। हरिकि, स्त्रीकि इत्यादि। अन्यत्र 'कु' वर्ण आता है। नीकु=तुझको, मीकु = तुमको, दॉरकु, रामुडुकु, आमॅकु - उस (स्त्री) को। उकारान्त ऋकारान्त, शब्दों में 'कु' जोड़ने से पूर्व नकार का आगम हो जाता है। जैसे—रामनकु, वनमुनकु इत्यादि।

हिन्दी भाषा की षष्ठी विभक्ति—का, के, की के अनुसार तेलुगु की षष्ठी विभक्ति 'यॉक्क' का ही प्रयोग करना ठीक मालूम पड़ता है। यह 'यॉक्क' जब दो शब्दों के बीच में सम्बन्ध प्रदर्शन करता है तब लुप्त हो जाता है, यह बात साधारण तौर से ध्यान में रखें। जैसे—'रामुनियॉक्क गुर्रमु = राम का घोड़ा। तेलुगु में 'रामुनि गुर्रमु' शेष रहेगा; 'योक्क' का लोप होगा।

10. अन्दु, न—सप्तमी विभक्ति—ये अन्त में हों तो उकार, ऋकार अन्तवाले शब्दों में विभक्ति के पूर्व अन्त्यागम 'न' वर्ण होता है। जैसे—रामुनन्दु, रामुनियंदु, रामुलयंदु, स्त्रीयंदु, स्त्रीलयंदु।

## तेरहवाँ पाठ—पदमूडव पाठमु

## शब्दरूपावली

### (1) अकारांत पुंलिंग 'राम' शब्द

| | एकवचन | | बहुवचन | |
|---|---|---|---|---|
| 1. प्रथमा. | रामुडु | - राम | रामुलु | - राम |
| 2. द्वितीया. | रामुनिनि | - राम को | रामु | - रामों को |
| 3. तृतीया. | रामुनिचेत | - राम से | रामुलचेत | - रामों से |
| 4. चतुर्थी | रामुनिकै<br>रामुनिकॉरकु | राम के लिए | रामुलकै<br>रामुल कॉरकु | रामों के लिए |
| 5. पंचमी. | रामुनिनुंडि | - राम से | रमुलनुंडि | - रामों से |
| 6. षष्ठी. | रामुनियोक्क | -राम का, के, की; | रामुलुयॉक्क | - रामों का, के, की |
| 7. सप्तमी. | रामुनियंदु | - राम में | रामुलयंदु | - रामों में |
| 8. सम्बोधन. | ओ! रामुडा | - हे राम! | ओ रामुलारा! | |

## विशेष

राम के साथ - रामुनितो कूड   रामों के साथ - रामुलतो कूड

रामुनकु - राम को   रामुलकु - रामों को

रामुनिवल्ल (वलन) - राम के ज़रिये, राम से   रामुलवलन - रामों के ज़रिये, रामों से

रामुनिलो - राम में रामुल्लो - रामों में

कण्टॅ - से यह तुलनार्थक है। 'यह लड़का राम से बड़ा है' ऐसे

स्थान में 'से' के लिए 'कण्टॅ' का प्रयोग होता है। जैसे—ई पिल्लवाडु रामुनिकण्टॅ पॅद्दवाडु.

—'लो' 'लोपल' का अर्थ 'में' अन्दर, भीतर—होता है। जैसे—

इण्टिलोपल - घर में (के भीतर)

नालो - मुझमें (मेरे अन्दर)

(2) इकारान्त पुं. 'कवि' शब्द

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| 1. कवि | कवुलु |
| 2. कविनि | कवुलनु |
| 3. कविचेत | कवुलचेत |
| 4. कविकॉरकु | कवुलकॉरकु |

5. कविनुण्डि, वल्ल, वलन, कण्टॅ, कवुलनुण्डि, नुंचि, वल्ल, वलन.

विभक्तियों के प्रत्यय पूर्ववत् जोड़ देने से नपुंसकलिंग रूप बन जाते हैं।

(3) नपुंसकलिङ्ग शब्द

| एक. | वन | बहु. |
|---|---|---|
| 1. वनमु | | वनमुलु |
| 2. वनमुनु | | वनमुलनु |

'वनमु' के साथ अन्य विभक्ति प्रत्ययों को जोड़ने से रूप बन जाते हैं।

'चेयि' - हाथ का बहुवचन 'चेतुलु' होगा और 'कन्नु' (आँख) का कन्नुलु.

## तेलुगु की उपविभक्तियाँ

तेलुगु भाषा में विभक्ति प्रत्यय के पहले कुछ शब्दों के साथ और भी प्रत्यय लगते हैं जिनको उपविभक्ति कहते हैं। इ, टि, इण्टि, ति ये उपविभक्ति प्रत्यय हैं। इन्हें जोड़कर द्वितीया आदि विभक्तियों के प्रत्यय निम्नलिखित शब्दों के साथ जोड़ने चाहिए। (इनमें द्वितीय प्रत्यय नि नहीं जोड़ना चाहिए।)

| प्रथमा. | उपविभक्ति. | द्वितीया. | तृतीया. | इत्यादि. |
|---|---|---|---|---|
| ऊरु (ग्राम) | ऊरि | ऊरिनि | चेत | तोड |
| कालु (पैर) | कालि | कालि | चेत | तोड |
| त्राडु (रस्सी) | त्राटि | त्राटिनि | चेत | तोड |
| नोरु (मुँह) | नोटि | नोटिनि | चेत | तोड |
| वेयि (हज़ार) | वेयिंटि | वेयिंटिनि | चेत | तोड |
| अन्नि (नपुं० सब) | अन्निटिं | अन्निटिनि | चेत | तोड |
| कन्नु (आँख) | कण्टि | कण्टिनि | चेत | तोड |
| विल्लु (धनुष) | विण्टि | विण्टिनि | चेत | तोड |
| अरु (बैल का कंधा) | अरिति | अरितिनि | चेत | तोड |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| गोयि (गड्ढा) | गोति | गोतिनि | चेत | तोड |
| चेयि (हाथ) | चेति | चेतिनि | चेत | तोड |

11. गोयि, चेयि - इत्यादि शब्दों के रूप द्वितीया, तृतीया आदि में 'लु' का 'ल' होकर बनते हैं।

गोतुलु, गोतुलनु, गोतुलचेत इत्यादि.

**'कन्नु' (आँख) शब्द**

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| 1. कन्नु | कन्नुलु |
| 2. कण्टिनि | कन्नुलनु |
| 3. कंटिचेत, तो | कन्नुलचेत, तो |
| 4. कण्टिकॉरकु, कै | कन्नुलकॉरकु, कै |
| 5. कण्टिनुंचि, नुंडि, वल्ल, कण्ट | कन्नुलनुंचि, नुंडि, वल्ल, वलन |
| 6. कण्टियॉक्क | कन्नुलयॉक्क |
| 7. कण्टियन्दु, | कन्नुलयन्दु, कन्नुलंदु |

## अभ्यास-वाक्य—8

राम का घर कहाँ है ? - रामुनि इल्लु ऍक्कड उन्नदि ?

राम के खिलौने कहाँ हैं ? - रामुनि आट बॉम्मलु ऍक्कड उन्नवि ?

राम की बेटी अच्छी है - रामुनि कूतुरु मञ्चिदि.

राम की बहन को थोड़ा दूध दो - रामुनि सोदरिकि कॉञ्चॅमु पालु इम्मु.

मैं राम के घर में सोता हूँ - नेनु रामुनि इण्टिलो निद्रपोवुचुन्नानु.

मैं काशी से आता हूँ - नेनु काशीनुंडि वच्चुचुन्नानु.

राम के घर के भीतर कौन हैं? - रामुनि इण्टिलोपल ऎवरुन्नारु?

उस पुस्तक से यह पुस्तक बड़ी है - आ पुस्तकमुकण्टे ई पुस्तकमु पॆद्ददि.

मेरा घोड़ा तुम्हारे घोड़े से बहुत क़ीमती है - ना गुर्रमु मी गुर्रमुकण्टॆ चाला विलुवगलदि.

हम राम के साथ आते हैं - मेमु रामुनि तो कूड वच्चुचुन्नामु.

यह काम मुझसे न होगा - ई पनि नावल्ल (वलन) कादु.

### विभक्त्यर्थक अव्यय

| | |
|---|---|
| ऊपर - पैन | नीचे - क्रिंद |
| पर - मीद | बाहर - बयिट |
| अंदर, भीतर - लोपल | समीप, पास, नज़दीक - समीपमुन, दग्गर |
| सामने - ऎदुट | बाद - पिम्मट, तरुवात |
| पेश्तर, पहले - मुंदु, पूर्वमु | आगे - ऎदुट |
| बिना, बग़ैर - लेकुण्ड | साथ, के साथ - तो कूड |
| तरफ़, ओर - वैपु | बारे में, बाबत - गुरिंचि |
| बदले, बजाय, स्थान में, की जगह - मारुगा, बदुलुगा | समान, तरह - वलॆ, अट्लु |
| | पीछे - वॆनुक |

### अभ्यास-वाक्य—9

ऊपर कौन हैं? - पैन एवरुन्नारु?

ऊपर रामदास पंतुलुजी हैं - पैन रामदासु पन्तुलुगारु उन्नारु.
आप कुर्सी पर बैठिये - तमरु कुर्चीमीद कूर्चॉण्डि.
राम मकान के भीतर है - रामुडु इण्टि लोपल उन्नाडु.
सीता भीतर (अन्दर) बैठी है - सीता लोपल कुर्चॉनि उन्नदि.
मेरे पास मत बैठो - ना दग्गर कूर्चॉनवद्दु.
सीतापति शर्माजी के घर के पास उनका घर है - सीतापति शर्मा गारि इंटि दग्गर वारि इल्लु उन्नदि.
तुम नीचे क्यों बैठते हो? - मीरु क्रिन्द ऍन्दुकु कूर्चॉनुन्नारु.
उस घर के अन्दर चले जाइये - आ इण्टिलॉनिकि वॅळ्ळिपॉण्डि.
अब बाहर मत जाओ - इप्पुडु बयटकु पोवद्दु.
हमारे पीछे क्यों चलते हो? - मा वॅनुक ऍन्दुकु वच्चुचुन्नारु?
गुरुजी के सामने खड़े हो जाओ - गुरुवुगारि ऍदुट निलुवुमु.
वह शक्कर के बिना दूध नहीं पीता है - वाडु चक्कॅर लेकुण्डा पालु त्रागडु.
सुभद्रा देवी के बारे में उन्होंने क्या कहा? - सुभद्रादेविनि गुरिंचि वारु एमि चॅप्पिरि?

कुछ शब्द

पत्थर - रायि
कुआँ - बावि, नुय्यि
छाता - गॉडुगु
तारा - नक्षत्रमु
सूरज - सूर्युडु
चाँदनी - वॅन्नॅल
रात - रात्रि
नक्शा - पटमु

चाँद - चन्द्रुडु
दिन - दिनमु
कोठरी, कमरा - गदि

अध्यापक, उस्ताद - उपाध्यायुडु, अय्यवारु
पाठशाला, मदरसा - बडि, पाठशाल

## कुछ क्रियाएँ

डूबना - मुनिगिपोवुट
जागना - मेलुकॉनुट
खोलना - तॅरचुट
उड़ना - ऍगुरुट
गाना - पाडुट

डुबोना - मुंचुट
जगाना - मेल्कॉलुपुट
तैरना - ईदुट
भागना - पारिपोवुट
मलना - रुद्दुट

यह गोपाल का घर है - इदि गोपालुनि इल्लु.

गोपाल के घर में कौन रहता है? - गोपालुनि इण्टिलॉ ऍवरु निवसिंचुचुन्नारु?

हमारे गुरुजी गोपाल के घर में रहते हैं - मा गुरुवुगारु गोपालुनि इंटिलो उण्टुन्नारु (निवसिंचुचुन्नारु).

हमको रात में कौन उजाला देता है? - मनकु रात्रियन्दु ऍवडु प्रकाशमु इच्चुचुन्नाडु?

रात में चाँद उजाला देता है - रात्रियन्दु चन्द्रुडु प्रकाशमु इस्तुन्नाडु (इच्चुचुन्नाडु).

तुम कहाँ सोते हो? - मीरु ऍक्कड निद्रपोवुचुन्नारु?

मैं कमरे में सोता हूँ - नेनु गदिलॉ निद्रपोवुचुन्नानु.

नारायण की किताब लक्ष्मीचन्द्र की किताब से मोटी है - नाराय-
णुनि पुस्तकमु लक्ष्मीचन्द्रुनि पुस्तकमु कण्टॆ लावुग उन्नदि.

दिन में उजाला सूरज से आता है - दिनमन्दु प्रकाशमु सूर्युनिनुंचि
वच्चुचुन्नदि.

आज अंधेरा क्यों है? - नेडु चीकटिगा ऎन्दुकुन्नदि?

आज अमावास्या है - नेडु अमावास्य.

तुम धूप में मत जाओ - मीरु ऎण्डलो पोवद्दु.

वे कितने बजे जागते हैं? - वारु ऎन्नि गंटलकु मेलुकॉनुचुन्नारु?

हम आठ बजे उठते हैं - मेमु ऎनिमिदि गंटलकु लेचुचुन्नामु.

क्या राम दिन में सोता है? - एमि, रामुडु पगटिलो निद्रपोवु-
चुन्नाडा?

वह दिन में कभी नहीं सोता - वाडु दिनमन्दु ऎप्पुडुनु निद्रपोडु.

लक्ष्मीनारायण तालाब में ख़ूब तैरता है - लक्ष्मीनारायणुडु चॆरुवुलो
बागा ईदुचुन्नाडु.

नागभूषण के घर में बहुत कमरे हैं - नागभूषणुनि इण्टिलो चाला
गदुलु उन्नवि.

क्या दामोदर की पुस्तक आपके घर में है? - दामोदरुनि पुस्तकमु
तम इंटिलो उन्नदा?

धूप बड़ी तेज़ है - ऎण्ड चाला तीव्रमुगा उन्नदि.

धूप में छाता खोलकर चलो - ऎण्डलो गॉडुगु तॆरचि पॉम्मु (पॉण्डि-
चलिये)

प्त कुएँ का पानी अच्छा नहीं है - ई नूति (बावि) नीरु मंचिदि काटु.

तालाब का पानी पीते हैं? - वारु चॅरुवु नीरु त्रागुचुन्नारा?

त्थर पानी में डूबता है - रायि नीटिलो मुनिगिपोवुनु.

ष्ण गोविन्द को जगाता है - कृष्णुडु गोविन्दुनि मेलुकॉल्पुचुन्नाडु.

मनाथ दुर्गाप्रसाद की तरह गाता है - रामनाथुडु दुर्गाप्रसादुनि वलॅ पाडुचुन्नाडु.

म मेरी तरह पढ़ते हो - मीरु नावलॅ चदुवुचुन्नारु.

ाजारामजी घर से अभी बाहर जाते हैं - राजारामय्य इंटिनुंचि इप्पुडे बयटिकि पोवुचुन्नारु.

म रोज़ रात में ठीक नौ बजे सो जाते हैं - मेमु प्रतिदिनमु रात्रिलो सरिगा तॉम्मिदि गंटलकु निद्रपोवुचुन्नामु.

ह पेड़ मेरे घर के सामने है - ई चॅट्टु ना इंटि ऍदुट उन्नदि.

म पेड़ के नीचे क्यों बैठते हो? - मीरु चॅट्टु क्रिन्द ऍन्दुकु कूर्चॉनुचुन्नारु?

योंकि वहाँ अच्छी छाया है - ऍन्दुचेतननगा, अक्कड चक्कनि नीड़ उन्नदि.

ाम पानी में उतरता है - रामुडु नीटिलॉ दिगुचुन्नाडु.

ह नदी में अच्छी तरह तैरता है - वाडु नदिलो बागुगा ईदुचुन्नाडु.

बाजार की तरफ़ जाता हूँ - नेनु बाजावैपुकु पोवुचुन्नानु.

रामचन्द्रावजी की जगह पर आजकल कौन काम करता है? - रामचन्द्रावुगारि स्थानमुन प्रस्तुतमु ऍवरु पनि चेयुचुन्नारु?

आपको नहीं मालूम? मोहनदास काम करता है - मीकु तॅलियदा? मोहनदासु पनि चेयुचुन्नाडु.

क्या, वे तुम्हारे अध्यापक हैं? - वारु मी उपाध्यायुला?

नहीं, वे कृष्णदास के अध्यापक हैं - कादु, वारु कृष्णदासुकि उपाध्यायुलु.

वह कमरे के अन्दर क्यों सोती है? - आमॅ गदिलोपल ऍन्दुकु निद्रपोवुचुन्नदि?

तुम राम के बाद क्यों उठते हो? - मीरु रामुनि तरुवात ऍन्दुकु लेचुचुन्नारु?

क्योंकि मैं उनके बाद सोता हूँ - ऍन्दुकनगा, नेनु वारि तरुवात निद्रपोवुचुन्नानु.

कल से तुम पहले उठो - रेपटिनुंचि मीरु मुंदुगा लेवंडि.

वासुदेव रोज़ हमारे साथ पाठशाला जाता है - वासुदेवुडु रोजु मातोकूड पाठशालकु पोवुचुन्नाडु.

मेरा घर बहुत ही नज़दीक है - ना इल्लु चाला दग्गरने उन्नदि.

तुम पहले जाओ, मैं पीछे आता हूँ - मीरु मुन्दु पॉण्डि, नेनु तरुवात वच्चॅदनु.

## उत्तम पुरुष

### 'नेनु' - मैं और 'मेमु' - हम

| | |
|---|---|
| नेनु - मैं | मेमु, मनमु - हम |
| नन्नु - मुझे | मम्मु, मम्मुलनु - हमें |
| नाचेत, नातो - मुझसे | मातो, माचेत - हमसे |
| नाकै, ना कॉरकु - मेरे लिए | माकै, माकॉरकु - हमारे लिए |
| (नानुंचि) नानुण्डि - मुझसे | मानुण्डि - हमसे |
| नायॉक्क - मेरा, रे-री ⓧ | मायॉक्क - हमारा, रे-री |
| नायन्दु - मुझमें | मायन्दु - हममें |
| नातो कूड - मेरे साथ | मातो कूड - हमारे साथ |
| नाकु - मुझको | माकु - हमको |
| नावल्ल, ना वलन - मुझसे, मेरे द्वारा | मावल्ल, मा वलन - हमसे, हमारे द्वारा |
| नाकण्टॅ-मुझसे, मेरी अपेक्षा (तुलना) | माकण्टॅ - हमसे, हमारी अपेक्षा |
| नामीद, नापै - मुझपर | मामीद, मापै - हमपर |
| नालो - मुझमें | मालो - हममें |
| नालोपल - मेरे अन्दर | मालोपल - हमारे अन्दर |

## मध्यम पुरुष

### 'नीवु' तू और बहुवचन 'मीरु' - तुम

| | |
|---|---|
| नीवु - तू | मीरु - तुम |
| निन्नु - तुझे | मिम्मु, मिम्मुलनु - तुम्हें |

| | |
|---|---|
| नीतो, नीचेत, नीचे - तुझसे | मीतो, मीचेत, मीचे - तुमसे |
| नीकै, नीकॉरकु - तेरे लिए | मीकै, मीकॉरकु - तुम्हारे लिए |
| नीनुंडि, नीनुंचि - तुझसे | मीनुंडि, मीनुंचि - तुमसे |
| नीयॉक्क - तेरा-रे-री | मीयॉक्क - तुम्हारा-रे-री |
| नीयन्दु - तुझमें | मीयन्दु - तुममें |
| नीतोकूड - तेरे साथ | मीतोकूडा - तुम्हारे साथ |
| नीकु - तुझको | मीकु - तुमको |
| नीवल्ल, नीवलन - तुझसे, तेरे द्वारा | मीवल्ल, मीवलन - तुमसे, तुम्हारे द्वारा |
| नीकण्टॅ - तेरी अपेक्षा, तुझसे | मीकण्टॅ - तुम्हारी अपेक्षा, तुमसे |
| नीमीद, नीपैन, नीपै - तुझपर | मीमीद, पै, पैन - तुमपर |
| नीलो - तुझमें | मीलो - तुममें |
| नीलोपल - तेरे अन्दर | मीलोपल - तुम्हारे अन्दर |

### आप - तमरु
(आदर सूचक)

1. तमरु - आप
2. तमरिनि - आपको
3. तमचेत - आपसे
4. तमकै, तमकॉरकु - आपके लिए
5. तमनुंचि - आपसे
6. तमयॉक्क - आपका-के-की
7. तमयन्दु - आपमें

तमतोकूड, तमकु, तमवल्ल, तमवलन, तमकण्टॅ, तममीद, तमपैन, तमलो, तमलोपल

पुल्लिग एकवचन 'वाड्डु' - वह ; 'वारु' - वे बहुवचन

| | |
|---|---|
| वाड्डु, अतड्डु, आयन - वह | वारु - वे |
| वानिनि, आयननि, अतनिनि - उसे, उसको | वारिनि-उन्हें, उनको |
| वानिचेत, अतनिचेत, आयनचेत - उससे | वारिचेत - उनसे |
| वानिकॉरकु, अतनिकॉरकु, आयनकॉरकु } उसके लिए | वारिचेत - उनके लिए |
| वानिनुण्डि, नुंचि, अतनिनुंचि आयन नुंचि - उससे | वारिनुंडी - उनसे |
| वानियॉक्क, अतनियॉक्क, आयनयॉक्क - उसका-के-की | वारियॉक्क - उनका-के-की |
| वानियंदु, अतनियंदु, आयनयंदु - उसमें | वारियंदु - उनमें |
| अतनितोकूड, आयनतोकूड, वानितोकूड | वारितो कूड |
| अतनिकि, आयनिकि, वानिकि | वारिकि |
| अतिनिकण्ट, आयनकण्ट, वानिकण्ट | वारिकण्ट |
| अतिनिवलन, आयनवलन, वानिवलन | वारिवलन |
| अतनिलो, आयनलो, वानिलो | वारिलो |
| अतनिलोपल, आयनलोपल, वानिलोपल | वारिलोपल |
| अतनिमीद, आयनमीद, वानिमीद - उसपर | वारिमीद - उनपर |

स्त्रीलिंग 'आमॅ' - वह

| | |
|---|---|
| 1. आमॅ | बहुवचन में |
| 2. आमॅनु | पुल्लिग के समान |

3. आमॅचेत
4. आमॅकॉरकु
5. आमॅनुंचि
6. आमॅयॉक
7. आमॅयंदु

आमॅतोकूड, आमॅकु, आमॅवलन, आमेकण्टॅ, आमॅमीद, आमॅपै, आमॅलो, आमॅलोपल.

नपुंसक लिंग के रूप इस प्रकार होते हैं ।

| एक | बहुवचन |
|---|---|
| 1. अदि - वह | अवि - वे |
| 2. दानिनि - उसे | वाटिनि - उन्हें |
| 3. दानिचेत - उससे | वाटिचेत - उनसे |
| 4. दानिकॉरकु - उसके लिए | वाटिकॉरकु - उनके लिए |
| 5. दानिनुंचि - उससे | वाटिनुंचि - उनसे |
| 6. दानियॉक - उसका, के, की | वाटियॉक - उनका, के, की |
| 7. दानियंदु - उसमें | वाटियंदु - उनमें |

1. दानितोकूड, दानिकि, दानिवलन, दानिकण्टॅ, दानिमीद, दानिपै, दानिलोपल.

2. वाटितोकूड, वाटिकि, वाटिवलन, वाटिकण्टॅ, वाटिमीद, वाटिपैन, वाटिलोपल.

अन्दरु - सब (पु. स्त्री.)

1. अन्दरु
2. अन्दरिनि
3. अन्दरिचेत
4. अन्दरिकॉरकु

5. अन्दरिनुण्डि
6. अन्दरियॉक्क
7. अन्दरियन्दु

अन्दरितोकूड, अन्दरिकि, अन्दरिकण्ट, अन्दरिवलन, अन्दरिमीद, अन्दरिलो, अन्दरिलोपल.

## चौदहवाँ पाठ—पदुनालगव पाठमु

| | |
|---|---|
| नाम - पेरु | घोड़ा - गुर्रमु |
| कुत्ता - कुक्क | गाय - आवु |
| भैंस - गेर्दे | हाथी - एनुगु |
| जानवर - जन्तुवु | सींग - कॉम्मु |
| पूँछ - तोक | मोर - नॅमिलि |
| पक्षी, चिड़िया - पक्षि | मनुष्य, आदमी, शख़्स - मनुष्युड्ड |

### क्रियाएँ

| | |
|---|---|
| पूछो - अड्डगुमु | सुनो - विनुमु |
| बुलाओ - पिलुवुमु | चढ़ो - ऍक्कुमु |
| उतरो - दिगुमु | उड़ो - ऍगुरुमु |

### अभ्यास-वाक्य—10

जो आदमी यहाँ आता है उसका नाम क्या है - इक्कडिकि वच्चु मनुष्युनि पेरु एमि ?

उसको बुलाओ - वानिनि पिलुवुमु.

तुम्हारा नाम क्या है ? - मी पेरु एमि ?

मेरा नाम जनार्दन है - ना पेरु जनार्दन.

तुम कहाँ जाते हो ? - मीरु ऍक्कडिकि पोवुचुन्नारु ?

मैं पाठशाला जाता हूँ - नेनु बडिकि (पाठशालकु) पोवुचुन्नानु.

तुम्हारे साथ कौन है ? - मीतोकूड ऍवरुन्नारु ?

वह मेरी बहन है - आमॅ ना सोदरि.

उसका नाम क्या है ? - आमॅ (स्त्री) पेरु एमि ?

उसका नाम क्या है ? - वानि (पुं) पेरु एमि ?

उसका नाम क्या है ? - दानि (नपुं.) पेरु एमि ?

उसका नाम क्या है ? - आमॅ पेरु एमि ?

उसका नाम जानकी है - आमॅ पेरु जानकि.

वह कहाँ जाती है ? - आमॅ ऍक्कडकि पोवुचुन्नदि ?

वह मेरे साथ घर जाती है - आमॅ नातोकूड इण्टिकि पोवुचुन्नदि.

कुत्ता तुम्हारे घर के बाहर है - कुक्क मी इण्टि बयट उन्नदि.

उनकी गाय अभी बाहर से आ रही है - वारि आवु इप्पुडे बयटनुण्डि वच्चुचुन्नदि.

वह आजकल दूध नहीं देती है - अदि इप्पुडु पालु इच्चुटलेदु.

राम की भैंस बहुत दूध देती है - रामुनि बॅर्रॅ (गेदॅ) चाल पालु इच्चुचुन्नदि.

सीता ! तुम कोठरी के अन्दर क्या करती हो ? - सीता ! नीवु गदिलोपल एमि चेयुचुन्नावु ?

मैं यहाँ गाती हूँ, आप नहीं सुनते - नेनु इक्कड पाडुचुन्नानु, तमरु विनुट लेदा ?

वे रोज़ चबूतरे पर बैठते हैं ? - वारु प्रति दिनमु अरुगुमीद कूर्चॉनुचुन्नारु.

पेड़ पर से उतरो - चॅट्टुमीदनुण्डि दिगुमु.

हम हाथी पर चढ़ते हैं - मेमु एनुगुमीद ऍक्कुचुन्नामु.

उसके सींग पकड़ो - दानि कॉम्मुलु पट्टुकॉनुमु.

गाय घोड़े से छोटी होती है - आवु गुर्रमुकण्टॅ चिन्नदि.

तुम्हारा घर मेरे घर के पास है - मी इल्लु ना इण्टिदग्गिर उन्नदि.

ऐ राम ! क्या तुम तैरते हो ? - ओ राम ! नीवु ईदुचुन्नावा ?

नहीं, मैं नहीं तैरता - लेदु, नेनु ईदनु.

मैं तैरना नहीं जानता - नाकु ईत रादु.

चिड़ियाँ उड़ती हैं - पक्षुलु ऍगुरुचुन्नवि.

चिड़ियों में मोर सबसे अच्छा है - पक्षुललो नॅमलि अन्निटिकंटे मंचिदि.

इस गाय का मालिक उस घर में रहता है - ई आवु यजमानि आ इण्टिलॉ उण्टुन्नाडु.

जाओ मत, पहले हमारी बात सुनो - पोवद्दु, मुंदु मा माट विनुमु.

उनसे पूछो कि राम कहाँ संस्कृत सीखता है ? - रामुडु ऍक्कड संस्कृतमु नेर्चुकॉनुचुन्नाडनि वारिनि अडुगुमु.

वे कहते हैं कि राम राष्ट्रीय पाठशाला में पढ़ता है - रामुडु
जातीय पाठशालयंदु चदुवुचुन्नाडनि वारु चॅप्पुचुन्नारू.
महालक्ष्मी हम सबको बुलाती है - महालक्ष्मि मम्मुलनन्दरिनि
पिलुचुचुन्नदि.
तुम यहाँ किसलिए बैठती हो ? - मीरु इक्कड ऍन्दुकु कूर्चॉनुचुन्नारु ?
किताबों में रामायण बहुत अच्छी है - पुस्तकमुललो रामायणमु
चाला मंचिदि.
मैं उसको रोज़ सुनता हूँ - नेनु दानिनि प्रतिदिनमु विनुचुन्नानु.
तुम उसे किससे सुनते हो ? मीरु दानिनि ऍवरिनुंडि विनुचुन्नारु ?
मैं लक्ष्मीनारायण शास्त्रीजी से सुनता हूँ - नेनु लक्ष्मीनारायण
शास्त्रिगारिवल्ल विनुचुन्नानु.
यह काम तुम किस वास्ते करते हो ? - ई पनि मीरु ऍन्दुकु चेयु-
चुन्नारु ?
वह चिड़िया मेरे घर के ऊपर उड़ती है - आ पक्षि ना इण्टिपैन
ऍगुरुचुन्नदि.
क्या आप समझते हैं ? - तमरु तॅलुसुकॉनुचुन्नारा ?
उस तालाब का पानी अच्छा नहीं - आ चॅरुवु नीरु बागुण्ड लेदु.
हम इस कुएँ का पानी पीते हैं - मेमु ई बावि नीरु त्रागुचुन्नामु.
उस बाग़ में आम के पेड़ बहुत हैं - आ तोटलो मामिडिचॅट्लु
चाला उन्नवि.

## पन्द्रहवाँ पाठ—पदुनैदव पाठमु

### अभ्यास-वाक्य—11

तुम उनके लड़के के पास मत जाओ - मीरु आयन कॉडुकु दग्गरकु पोवद्दु.

मेरी फूलों की माला कहाँ है? - ना पुव्वुल दण्ड ऍक्कड उन्नदि?

वह चन्द्रशेखरन के पास है - अदि चन्द्रशेखरुनि दग्गर उन्नदि.

वह अच्छी विद्या सीखता है - वाडु मंचि विद्य नेर्चुकॉनुचुन्नाडु.

भारतवर्ष हमारा देश है - भारतखण्डमु मा (मन) देशमु.

चाँद से सूरज बड़ा है - चन्द्रुनिकण्टॅ सूर्युडु पॅद्दवाडु.

यह कौन-सा महीना है? - इदि एमि मासमु?

यह कार्तिक मास है? - इदि कार्तिक मासमु.

आज कौन-सी तिथि है? - नेडु ए तेदि?

बचपन के बाद जवानी आती है - चिन्नतनमु तरुवात यौवनमु वच्चुचुन्नदि.

श्रीमती बेसेण्ट ने बुढ़ापे में भी देश के लिए बहुत काम किया - श्रीमती बिसॅण्टम्मगारु वृद्धाप्यमन्दुकूड देशमुकॉरकु चाला पनि चेसिरि.

आजकल हमारा देश बड़ी बुरी हालत में है - प्रस्तुतमु मन देशमु चाला चॅड्ड स्थितिलो उन्नदि.

मद्रास में हिन्दी भाषा का प्रचार पैंतीस वर्षों से हो रहा है - चॅन्नपुरि राजधानिलो हिन्दी भाषा प्रचारमु मुप्पदि ऐदु संवत्सरमुलनुण्डि जरुगुचुन्नदि.

यहाँ बहुत पंजाबी सिपाही हैं - इक्कड चालमंदी पंजाबु सिपायिलु उन्नारु.

यहाँ बहुत सिक्ख सिपाही हैं - इक्कड चालमंदी सिक्कु सिपायिलु उन्नारु.

लक्ष्मी की माला का वह मोती बड़ा अच्छा है - लक्ष्मियॉक्क माललो उन्न आ मुत्यमु चाला बागुगा उन्नदि.

वह मुझसे बड़ी कड़ाई से काम लेता है - आयन* नातो चाला कठिनमुगा पनि तीसुकॉनुचुन्नाड्डु.

इस पाठशाला के लड़के बड़ा शोर मचाते हैं - ई पाठशालयॉक्क पिल्लवाण्ड्रु चाला अल्लरि चेयुचुन्नारु.

जहाँ मैं था, थोड़े ही फ़ासले पर उनका घर है - नेनुन्न चोटिकि दग्गरने वारि इल्लु उन्नदि.

उसने कहा कि मैं आता हूँ - नेनु वस्तानानि वाड्डु चॅप्पॅनु.

जो कल आया था उसे लेकर हमारे घर आओ - निन्न वच्चिन वानिनि तीसुकॉनि माइण्टिकि रम्मु.

तुम अपना काम कर लो - मीरु मी पनि चेसुकॉनण्डि.

कृपा करके मेरा यह काम कर दो - दयचेसि नयॉक्क ई पनि चेसिपॅट्टण्डि.

---

* तेलुगु में वाड्डु, अतड्डु और आयन ये 3 शब्द 'वह' पुरुष वाचक शब्द के लिए आते हैं। वाड्डु नीचार्थक है। शेष दो का प्रयोग करना ठीक है।

रसोई बनती है, आप स्नान कर आइये - वण्ट सिद्धमगुचुन्नदि, तमरु स्नानमु चेसि रण्डि.

हमें सबको समानता से देखना चाहिए - मनमु अन्दरिनि समानमुगा चूडवलयुनु.

## सोलहवाँ पाठ—पदुनारव पाठमु

### वचन

#### एकवचन

1. हिन्दी के समान तेलुगु में भी दो वचन होते हैं—एकवचन, बहुवचन ।

2. 'डु' (पुल्लिग), 'मु' (नपुंसक), 'वु' (पु. न. उकारान्त शब्द)—ये तीनों वर्ण प्रथम विभक्ति के एकवचन में ही आते हैं । जैसे—रामुडु, वनमु, वस्तुवु.

3. धनुस्, तपस्, मनस् इत्यादि सकारान्त (नपुंसक) शब्दों के 'स' को द्वित्व कर एक वचन में अन्त में 'उ' जोड़ देना चाहिए । उदा :—धनुस्सु, तपस्सु, मनस्सु.

4. जिन शब्दों के अन्त में 'इस' (इमनिच्) प्रत्यय लगा हो वहाँ 'मु' विकल्प में से जोड़ा जाएगा । महिममु, महिम, गरिममु, गरिम, अणिममु, अणिम, लघिममु, लघिम.

5. सकारान्त पुंलिग शब्दों में 'स्' का विकल्प से लोप करने से अकारान्त पुंलिग (राम) शब्द की तरह उसका प्रयोग होगा या 'स्' हो जाएगा । उदा :—अंगिरस् - अंगिरसु, अंगिरसुडु.

बहुवचन

1. शब्द के जिस रूप से एक से अधिक संख्या का बोध होता है उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे—रामुलु, पुस्तकमुलु, वस्तुवुलु, स्त्रीलु.

2. साधारणतः शब्द के अन्त में 'लु' जोड़ने से बहुवचन बनता है। वनित (स्त्री)-वनितलु, देवत-देवतलु, नवल (उपन्यास)-नवललु, लत-लतलु, भ्रात-भ्रातलु, दिक्कु (दिशा)-दिक्कुलु.

3. पुल्लिंग बोधक 'डु' एकवचन प्रत्यय का लोप हो जाता है जब बहुवचन का 'लु' प्रत्यय जोड़ते हैं। रामुडु (एक.) रामुलु (बहु.) किन्तु 'त्राडु - रस्सी' शब्द के 'डु' का लोप, कभी-कभी नहीं होता। त्राडुलु, त्राळ्ळु (बहु.) रूप होगा।

4. इकारान्त शब्दों में 'लु' लगाने पर 'इ' का 'उ' हो जाता है। जैसे—कवि - कवुलु, कत्ति (छुरी) - कत्तुलु, हरि - हरुलु, वाहिनि - वाहिनुलु.

5. कुछ शब्दों में बहुवचन में शब्द का पररूप होने पर अन्त्य वर्ण का लोप हो जाता है। जैसे—चेनु (खेत)-चेलु, पेनु (जूँ)-पेलु, मीनु (मछली)-मीलु, रेयि (रात्रि)-रेलु, रायि (पत्थर)-रालु, वेयि (हज़ार)-वेलु.

6. कहीं-कहीं यह अन्त्य वर्ण का लोप विकल्प से होता है। जैसे—आवु (गाय)-आवुलु, जामु (प्रहर)-जामुलु, जालु, चुट्टमु (नातेदार)-चुट्टमुलु, चुट्टालु, मीसमु (मूँछ)-मीसमुलु, मीसालु.

7. दीर्घ आकार पूर्व 'ल' उपान्त्य अक्षरवाले संस्कृत 'महत्' वाचक शब्दों के बहुवचन में 'रु' अन्त में आता है। जैसे—बालुडु - बालुरु। ऐसे ही कुछ तेलुगु शब्दों में भी 'रु' है। उदा:—पगतुडु (शत्रु) - पगतुरु, अल्लुडु (जमाई) - अल्लुरु.

8. उकारान्त शब्दों में कभी-कभी 'वु' वर्ण का लोप हो जाता है। गुरुवु - गुरुवुलु, गुरुलु, तरुवु (वृक्ष) - तरुवुलु, तरुलु.

9. इन शब्दों के बहुवचन में दो रूप होते हैं। उदा:—गुण्डु (गोली) - गुण्डुलु, गुण्ड्लु, कालु (पैर) - कालुलु, काळ्ळु, गोरु (नख) - गोरुलु, गोळ्ळु.

निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन में रूपान्तर होता है—

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| विलुकाडु (धनुर्धारी) | विलुकाण्डु, विलुकारु |
| वेटकाडु (शिकारी) | वेटकाण्डु, वेटकारु |
| चीटी (चिट्ठी) | चीट्टुलु, चीट्लु |
| अरटि (केले के झाड़) | अरट्टुलु, अरण्ट्लु |
| तूडु (मुरार, मृणाल) | तूड्डुलु, तूण्ड्लु |
| वज्रमु (हीरा) | वज्रमुलु, वज्रालु |
| पगडमु (मूँगा) | पगडमुलु, पगडालु |
| पेरु (नाम) | पेरुलु, पेळ्ळु |

| | |
|---|---|
| कॉडवलि (हँसिया) | कॉडवण्ड्लु, कॉडवळ्लु |
| त्राडु (रस्सी) | त्राडुलु, त्राळ्लु |
| मॉगिलु (मेघ) | मॉगिलु, मॉगिळ्लु |
| ऊरु (गाँव) | ऊरुलु, ऊळ्लु |
| एरु (दरिया, नदी) | एरुलु, एळ्लु |
| विल्लु (धनुष) | विल्लु, विण्ड्लु |
| जॅट्टि (जेठी, मल्ल) | जॅट्टुलु, जॅट्लु |
| तड़ि (नमी, तरी) | तडुलु, तळ्लु |
| आलु (औरत, पत्नी) | आण्ड्रु |
| चॅल्लॅलु (छोटी बहिन) | चॅल्लॅण्ड्रु, चॅल्लॅळ्लु |
| कोडलु (बहू) | कोडळ्लु, कोडण्ड्रु |
| मुद्दरालु (मुग्धा स्त्री) | मुद्दराण्ड्रु |
| मिण्डडु (विट) | मिण्डण्ड्रु |
| कूतुरु (बेटी) | कूतुळ्लु |
| पॅण्ड्लि (शादी) | पेण्ड्रुण्ड्लु |
| रेडु (स्वामी, राजा) | रेण्ड्लु |
| मरदलु * | मरदण्ड्रु, मरदळ्लु |
| चॅलियलु (छोटी बहन) | चॅलियण्ड्रु, चॅल्लॅळ्लु |
| जवरालु (युवती) | जवराण्ड्रु |

* छोटे भाई की स्त्री या पत्नी की बहन, साली

# सत्रहवाँ पाठ—पदिएडव पाठमु

## सर्वनामों के विषय में

1. सर्वनाम चार हैं। (1) पुरुषबोधक, (2) सम्बन्ध-बोधक, (3) प्रश्नार्थक और (4) विशेषण सर्वनाम।

2. पुरुषबोधक में तीन सर्वनाम हैं—प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष।

3. प्रथम पुरुष को छोड़ बाकी दो में लिंग का कोई भेद नहीं। प्रथम पुरुष में—अतडु, आयन (सामान्य), वाडु (नीचार्थ में—वह), वीडु (यह) ये पुल्लिंग हैं। 'आमॅ' (वह) यह स्त्रीवाचक है। अदि (वह), इदि (यह) ये स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग हैं। नीवु (तू) मध्यम पुरुष और नेनु (मैं) उत्तम पुरुष है।

### तीनों के रूप

| पुरुष | लिंग | विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|---|
| प्र. | पुं. | प्रथमा | वाडु<br>वीडु | वारु<br>वीरु |
| प्र. | पुं. | द्वितीय | वानिनि<br>वीनिनि | वारिनि<br>वीरिनि |
| प्र. | पुं. | तृतीय | वानिच्चेत<br>वीनिच्चेत | वारिच्चेत<br>वीरिच्चेत |
| प्र. | स्त्री. | प्रथमा | आमॅ ;<br>ईमॅ ; इदि | वारु<br>वीरु |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| प्र. | स्त्री. | द्वितीया | आमॅनु<br>ईमॅनु<br>दानिनि<br>दीनिनि | वारिनि<br>वीरिनि<br>वाटिनि<br>वीटिनि |
| प्र. | स्त्री. | तृतीया | आमॅचेत<br>ईमॅचेत<br>दानिचेत<br>दीनिचेत | वारिचेत<br>वीरिचेत |
| प्र. | नपुं. | प्रथमा | अदि<br>इदि | अवि<br>इवि |
| प्र. | ,, | द्वितीया | दानिनि<br>दीनिनि | वाटिनि<br>वीटिनि |
| प्र. | ,, | तृतीया | दानिचेत<br>दीनिचेत | वाटिचेत<br>वीटिचेत |

| | | | |
|---|---|---|---|
| मध्यम | प्रथमा | नीवु | मीरु |
| मध्यम | द्वितीया | निन्नु | मिम्मु |
| मध्यम | तृतीया | नीचेत | मीचेत |
| उत्तम | प्रथमा | नेनु | मेमु |
| उत्तम | द्वितीया | नन्नु | मम्मु |
| उत्तम | तृतीया | नाचेत | माचेत |

(ऊपर तृतीया विभक्ति तक के प्रत्यय लगाकर रूप लिख दिये गये हैं। अभ्यास करनेवाले सब विभक्तियों के रूप लगाकर अभ्यास करें।)

4. 'तानु-आप (स्वयं)' यह भी प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम है। पुनरुक्ति दोष को मिटाने के लिए इसका प्रयोग कर्ता के बाद होता है।

उदा :—वाड्डु तानु निन्न वच्चिनाननि चॅप्पिनाड्डुं - वह कहता है कि (वह) कल आया है। आमॅ तानु योग्युरालनि अनुकॉनुचुन्नदि - वह समझती है कि आप (वह) बड़ी योग्य है। वारु तामु चॅप्पुनदि निजमंदुरु - वे अपनी कही हुई बात को ठीक समझते हैं।

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | तानु | तामु |
| द्वितीया | तन्नु | तम्मु |
| तृतीया | तनचेत | तमचेत |

5. 'वाड्डु' का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इसके बदले अतड्डु, आयन (वह पुरुष), इतड्डु, ईयन (यह पुरुष) का व्यवहार करें।

6. 'मनमु' यह नित्य बहुवचनान्त उत्तम और मध्यम पुरुष के लिए आता है। जिसका अर्थ है 'तुम-हम' या 'हम लोग।'

| | |
|---|---|
| प्रथमा | मनमु |
| द्वितीया | मनलनु |
| तृतीया | मनचेत, इत्यादि. |

उदा :—शिष्युडु उपाध्यायुनिचेत शिक्षिपबडॆनु - शिष्य अध्यापक से सज़ा दिया गया।

## काल

1. तेलुगु में 4 काल हैं। (1) वर्तमान (2) भूत (3) भविष्यत् और (4) तद्धर्मार्थिक।

(1) जो हो रहा है वह वर्तमान काल है। जैसे—नेनु तिनुचुन्नानु - मैं खाता हूँ। (2) जो हो चुका है वह भूत काल है। जैसे—रामुडु परुगॆत्तॆनु - राम दौड़ा, रावणुडु सीतनु अपहरिंचॆनु - रावण ने सीता को हरा। (3) आगे होनेवाली क्रिया में भविष्यत्काल होता है। जैसे—नेनु व्रासॆदनु - मैं लिखूँगा। (4) तद्धर्मार्थिककाल में स्वभाव, गुण आदि का बोध होता है। जैसे—आवु पालु इच्चुनु - गाय दूध देती है। दूध देना गाय का स्वभाव है। मेघमु वर्षिंचुनु - मेह बरसता है।

2. क्रियाएँ (1) समापक और (2) असमापक - दो प्रकार की होती हैं। वाडु पोवुचुन्नाडु - वह जाता है (यह समापक क्रिया है—अर्थात् क्रिया का काम पूरा हो जाता है) और पोयि - जाकर, कॉट्टि - मारकर, और तिनि - खाकर—ये असमापक क्रियाएँ हैं। इनमें क्रिया का काम पूरा नहीं हुआ।

# सहायक क्रिया

## उपक्रिया

3. काल आदि बनाने के लिए जो सहायक होकर रहती है उसे 'उपक्रिया' कहते हैं। तेलुगु में ऐसी क्रियाएँ चार हैं— उण्डु - हो, कलुगु - सक, पड्डु - पड़ और कॉनु - ले [चदुवुकॉनुट - पढ़ लेना, तॅलुसुकॉनुट - समझ लेना] ये क्रियाएँ प्रायः सब क्रियाओं से सम्बद्ध होती हैं।

### 'उण्डु' हो (है)? धातु

#### वर्तमानकाल

| पुरुष | लिंग | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्र. | पुं | उन्नाडु - है | उन्नारु - हैं |
| प्र. | स्त्री. | उन्नदि - है | उन्नारु - हैं |
| प्र. | नपुं. | उन्नदि - है | उन्नवि - हैं |
| मध्य. | पुं. स्त्री. | उन्नावु - है | उन्नारु - हो |
| उत्त. | पुं. स्त्री. | उन्नानु - हूँ | उन्नामु - हैं |

### 'कलुगु' - सक धातु

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथ. | पु. | कलडु (है) | कलरु (हैं) |
| प्रथ. | स्त्री. | कलदु (है) | कलरु (हैं) |
| प्रथ. | नपुं. | कलदु (है) | कलवु (हैं) |
| मध्य. | पुं. स्त्री. | कलवु (है) | कलरु (हो) |
| उत्त. | पुं. स्त्री. | कलनु (हूँ) | कलमु (हैं) |

## 'पड्डु' - (पड़) धातु

### वर्तमानकाल

| पुरुष | लिंग | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथ. | पुं. | पड्डुचुन्नाड्डु | पड्डुचुन्नारु |
| प्रथ. | स्त्री. | पड्डुचुन्नदि | पड्डुचुन्नारु |
| प्रथ. | नपुं. | पड्डुचुन्नदि | पड्डुचुन्नवि |
| मध्य. | पुं. स्त्री. | पड्डुचुन्नावु | पड्डुचुन्नारु |
| उत्तम. | पुं. स्त्री. | पड्डुचुन्नानु | पड्डुचुन्नामु |

### भूतकाल

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम | पुं. स्त्री. | पडॅनु | पडिरि |
| प्रथम | नपुं. | पडॅनु | पडिनवि |
| मध्यम. | पुं. स्त्री. | पडितिवि | पडितिरि |
| उत्तम. | पुं. स्त्री. | पडितिनि | पडितिमि |

### भविष्यत्काल

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथ. | पु. | पडगलड्डु | पडगलरु |
| प्रथ. | स्त्री. | पडगलदु | पडगलरु |
| प्रथ. | नपुं. | पडगलदु | पडगलवु |
| मध्यम. | पुं. स्त्री. | पडगलवु | पडगलरु |
| उत्तम. | पुं. स्त्री. | पडगलनु | पडगलमु |

### तद्धर्मार्थककाल

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथ. | पुं. स्त्री. | पड्डुनु | पड्डुदुरु |
| प्रथ. | नपुं. | पड्डुनु | पड्डुनु |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म. | पुं. स्त्री. | पड्डदुवु | पड्डदुरु |
| उ. | पुं. स्त्री. | पड्डदुनु | पड्डदुमु |

### निषेधार्थक तद्धर्म

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम. | पुं. | पडडु | पडरु |
| प्रथम. | स्त्री. | पडदु | पडरु |
| प्रथम. | नपुं. | पडदु | पडवु |
| मध्यम. | पुं. स्त्री. | पडवु | पडरु |
| उत्तम. | पुं. स्त्री. | पडनु | पडमु |

### प्रार्थनार्थक

मध्यम. पड्डमु, पड्ड पड्डडु, पडंडि

### व्यतिरेकार्थक [मत]

मध्यम. पडकुमु, पडकु पडकुडु, पडकण्डि

### असमापक क्रिया

1. पडि (पड़कर) क्त्वार्थक
2. पड़क (न पड़कर)
3. पड्डटकु (पढ़ने को) तुमुन्नार्थक
4. पड्डचुन्न (पड़ता हुआ) वर्तमानार्थक विशेषण
5. पडिन, पड्ड (पड़ा हुआ) भूतार्थक विशेषण
6. पडगल (पढ़नेवाला) भविष्यदर्थक विशेषण
7. पडनि (न पड़नेवाला) व्यतिरेकार्थक (उल्टा) विशेषण

## 'कॉनु' - खरीद धातु

### वर्तमान काल

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम. | पुं. | कॉनुचुन्नाड्डु | कॉनुचुन्नारु |
| प्रथम. | स्त्री. | कॉनुचुन्नदि | कॉनुचुन्नारु |
| प्रथम. | न. | कॉनुचुन्नदि | कॉनुचुन्नवि |
| मध्यम. | पुं. स्त्री. | कॉनुचुन्नावु | कॉनुचुन्नारु |
| उत्तम. | पुं. स्त्री. | कॉनुचुन्नानु | कॉनुचुन्नामु |

### भूतकाल

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम. | पुं. स्त्री. | कॉन्नॅनु | कॉनिरि |
| प्रथम. | नपुं. | कॉन्नॅनु | कॉनिनवि |
| मध्यम. | पुं. स्त्री. | कॉण्टिवि | कॉण्टिरि |
| उत्तम. | पुं. स्त्री. | कॉण्टिनि | कॉण्टिमि |

### भविष्यत्काल

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम. | पुं. स्त्री. | कॉनुनु | कॉनुदुरु |
| प्रथम. | नपुं. | कॉनुनु | कॉनुनु |
| मध्यम. | पुं. स्त्री. | कॉनुदुवु | कॉनुदुरु |
| उत्तम. | पुं. स्त्री. | कॉनुदुनु | कॉनुदुमु |
| प्रथम. | पुं. | कॉनगलड्डु | कॉनगलरु |
| प्रथम. | स्त्री. | कॉनगलदु | कॉनगलरु |
| प्रथम. | नपुं. | कॉनगलदु | कॉनगलवु |
| मध्यम. | पुं. स्त्री. | कॉनगलवु | कॉनगलरु |
| उत्तम. | पुं. स्त्री. | कॉनगलनु | कॉनगलमु |

## उन्नीसवाँ पाठ—पन्तॉम्मिद्व पाठमु

### स्वतंत्र क्रियाएँ

1. पोषिंचु - पोषण कर, कॉट्टु - मार-पीट

### वर्तमान काल

2. किसी धातु के साथ 'चुन्न' या 'चुन्ना' जोड़कर अन्त में 'उण्डु' धातु के वर्तमानकालिक रूप मिला देने से वर्तमानकाल के रूप बन जाते हैं।

"पोषिंचु - मार"

| पुरुष | लिंग | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम. | पुं. | पोषिञ्चुचुन्नाडु | पोषिञ्चुचुन्नारु |
| प्रथम. | स्त्री. | पोषिञ्चुचुन्नदि | पोषिञ्चुचुन्नारु |
| प्रथप. | नपुं. | पोषिञ्चुचुन्नदि | पोषिञ्चुचुन्नवि |
| मध्यम. | पुं. स्त्री. | पोषिञ्चुचुन्नावु | पोषिञ्चुचुन्नारु |
| उत्तम. | पुं. स्त्री. | पोषिञ्चुचुन्नानु | पोषिञ्चुचुन्नामु |

"कॉट्टु - मार"

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम. | पुं. | कॉट्टुचुन्नाडु | कॉट्टुचुन्नारु |
| प्रथम. | स्त्री. | कॉट्टुचुन्नदि | कॉट्टुचुन्नारु |
| प्रथम. | नपुं. | कॉट्टुचुन्नदि | कॉट्टुचुन्नवि |
| मध्यम. | पुं. स्त्री. | कॉट्टुचुन्नावु | कॉट्टुचुन्नारु |
| उत्तम. | पुं. स्त्री. | कॉट्टुचुन्नानु | कॉट्टुचुन्नामु |

### भूतकाल

3. प्रथम पुरुष एकवचन में और नपुंसकलिंग के बहुवचन में धातु के अन्त में 'एनु' लगाने से उस धातु का भूतकालिक

प्रथमपुरुष बन जाता है। पुंलिंग, स्त्रीलिंग बहुवचनान्त प्रथम पुरुष में 'इरि' जोड़ना चाहिए। मध्यम पुरुष के एकवचन और बहुवचन में क्रम से धातु को इकारान्त बनाकर 'तिवि', 'तिरि' और उत्तम पुरुष एक और बहुवचनों में क्रम से 'तिनि' 'तिमि' जोड़ने से सामान्य भूतकाल बनता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम. | पुं. स्त्री. | पोषिंचॅनु | पोषिंचिरि |
| प्रथम. | नपुं. | पोषिंचॅनु | पोषिंचॅनु |
| मध्यम. | पुं. स्त्री. | पोषिंचितिवि | पोषिंचितिरि |
| उत्तम. | पुं. स्त्री. | पोषिंचितिनि | पोषिंचितिमि |

* * *

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम. | पुं. स्त्री. | कॉट्टॅनु | कॉट्टिरि |
| प्रथम. | नपुं. | कॉट्टॅनु | कॉट्टॅनु |
| मध्यम. | पुं. स्त्री. | कॉट्टितिवि | कॉट्टितिरि |
| उत्तम. | पुं. स्त्री. | कॉट्टितिनि | कॉट्टितिमि |

## भविष्यत्काल

4. प्रथम पुरुष एकवचन (पुं. स्त्री. नपुं) में धातु के अन्त में 'नु' प्रत्यय जोड़ने से, प्रथम पुरुष (पुं. स्त्री.) और मध्यम पुरुष बहुवचन में 'एदुरु' तथा उत्तम पुरुष एकवचन में 'एदनु' और बहुवचन में 'एदमु' जोड़ने से भविष्यत्काल बनता है। नपुंसकलिंग एक और बहुवचन में केवल 'नु' जोड़ना चाहिए।

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम. | पुं. | पोषिंचुनु (वाड्डु) | पोषिंचॅदरु (वारु) |
| प्रथम. | स्त्री. | पोषिंचुनु (आमॅ) | पोषिंचॅदरु (वारु) |
| प्रथम. | नपुं. | पोषिंचॅुनु (अदि) | पोषिंचुनु (अवि) |
| मध्यम. | पुं. स्त्री. | पोषिंचॅदवु (नीवु) | पोषिंचॅदरु (मीरु) |
| उत्तम. | पुं. स्त्री. | पोषिंचॅदनु (नेनु) | पोषिंचॅदमु (मेमु) |

'वच्चु - आ'

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथम. | पुं. स्त्री. | वच्चुनु | वच्चॅदरु |
| प्रथम. | नपुं. | वच्चुनु | वच्चुनु |
| मध्यम. | पुं. स्त्री. | वच्चॅदवु | वच्चॅदरु |
| उत्तम. | पुं. स्त्री. | वच्चॅदनु | वच्चॅदमु |

## तद्धर्मार्थक काल

5. इस काल के विषय में हम पहले लिख चुके हैं। यह वस्तु के स्वभाव तथा गुण को बतलाता है। जैसे—'सूर्य चमकता है'। यहाँ चमकना सूर्य का सहज गुण या स्वभाव है। इसी तरह मेघ बरसता है, घोड़ा दौड़ता है, गाय दूध देती है, इत्यादि वाक्यो में वस्तु का स्वभाव या गुण प्रकट होता है। ऐसे अवसर पर 'तद्धर्मार्थक काल' का प्रयोग करना चाहिए।

6. धातु के अन्त में प्रथम पुरुष (पुं. स्त्री. नपुं.) एकवचन में और नपुंसकलिंग बहुवचन में 'नु' लगाने से, पुल्लिंग और स्त्रीलिंग (प्रथम पुरुष) बहुवचन में 'दरु' लगाने से, मध्यम पुरुष एक और बहुवचनों में क्रम से 'दुवु' 'दुरु' लगाने से उत्तम पुरुष

एक और बहुवचनों में क्रम से 'दुनु' 'दुमु' लगाने से, तद्धर्मार्थिक काल बनता है। नपुंसकलिंग बहुवचन (प्रथमपुरुष) के अन्त में 'नु' जोड़ना चाहिए।

| पुरुष | लिंग | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम. | पुं. स्त्री. | पोषिंचुनु | पोषिंचुदुरु |
| प्रथम. | नपुं. | पोपिंचुनु | पोषिंचुनु |
| मध्यम. | पुं. स्त्री. | पोषिंचुदुवु | पोषिंचुदुरु |
| उत्तम. | पुं. स्त्री. | पोषिंचुदुनु | पोषिंचुदुमु |
| प्रथम. | पुं. स्त्री. | कॉट्टुनु | कॉट्टुदुरु |
| प्रथम. | नपुं. | कॉट्टुनु | कॉट्टुनु |
| मध्यम. | पुं. स्त्री. | कॉट्टुदुवु | कॉट्टुदुरु |
| उत्तम. | पुं. स्त्री. | कॉट्टुदुनु | कॉट्टुदुमु |

'व्यतिरेकार्थक'

7. व्यतिरेक का अर्थ है—उल्टा। जैसे—'खाना' इसका उल्टा 'नहीं खाना', 'जाकर', का उल्टा 'न जाकर', 'दौड़ता है' का उल्टा 'नहीं दौड़ता है', 'पढ़ेगा' का उल्टा 'नहीं पढ़ेगा' इत्यादि होता है।

8. व्यतिरेकार्थक रूप बनाने के लिए पुलिंग में प्रथमपुरुष एकवचन में 'डु', स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग में 'दु' पुलिंग और स्त्रीलिंग बहुवचन में 'रु', नपुंसकलिंग बहुवचन में 'वु' और मध्यम पुरुष एक और बहुवचनों में क्रम से 'वु' और 'रु' तथा

उत्तम पुरुष एकवचन और बहुवचन में क्रम से 'नु' और 'मु' लगाना चाहिए। साथ ही धातु के अन्त के 'उ' को 'अ' कर देना चाहिए। और अन्त में धातु के 'इञ्चु' का 'इम्प' हो जाता है।

(वाड्ड) पोषिंपड्ड (वारु) पोषिंपरु
(आमॅ) पोषिंपदु (वारु) पोषिंपरु
(नीवु) पोषिंपवु (मीरु) पोषिंपरु
(नेनु) पोषिंपनु (मेमु) पोषिंपमु

## 'कॉट्टु'

(वाड्ड) कॉट्टड्ड (वारु) कॉट्टरु
(आमॅ) कॉट्टदु (वारु) कॉट्टरु
(अदि) कॉट्टदु (अवि) कॉट्टवु
(नेनु) कॉट्टनु (मेमु) कॉट्टमु
(नीवु) कॉट्टवु (मीरु) कॉट्टरु

## प्रार्थनार्थक

6. यह मध्यम पुरुष ही में होता है। नीवु (तू), मीरु (तुम) और तमरु (आप) इसके कर्ता हैं। धातु के अन्त में एकवचन में 'मु' और बहुवचन में 'ड्डु' या 'अण्डि' लगाने से प्रार्थनार्थक विध्यर्थक बनता है। 'इच्चु' का 'इम्मु' होता है।

विशेष—ध्यान रखना चाहिए कि 'वच्चु=आ' धातु का रूप एकवचन में रम्मु और बहुवचन में 'रण्डु' या 'रण्डि' होता है।

(नीवु) पोषिंपुमु, पोषिंचुमु, (मीरु, तमरु) पोषिंचण्डि, पोषिंपुड्डु।

| | |
|---|---|
| कॉट्टुमु | कॉट्टण्डि, कॉट्टुड्डु |
| व्रायुमु | व्रायण्डि, व्रायुड्डु |
| तिनुमु | तिनण्डि, तिनुड्डु |

"चूचु - देख' का 'चूड्डु' करके मु, ड्डु, अण्डि (चूडण्डि) आदि प्रत्यय लगाइये। इच्चु (दे) का इम्मु, इण्ड्डु, इव्वण्डि होता है।

## निषेधार्थक

### (मना करना)

10. मध्यम पुरुष एकवचन और बहुवचनों में क्रम से 'कुमु' 'कुड्डु' जोड़ने से निषेधार्थक बन जाता है। धातु का अन्त्य 'उ' अक्षर 'अ' हो जाएगा। जैसे 'वॅळ्ळु-जा' तू मत जा - नीवु वॅळ्ळकुमु ; आप मत खाइये - तमरु तिनकुड्डुं या तिनकण्डि.

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| (नीवु) पोषिंपकुमु | (मीरु) पोषिंपकुड्डु |
| कॉट्टकुमु | कॉट्टकुड्डु |

## बीसवाँ पाठ—इरुवदियव पाठमु

## आशीर्वादार्थक

11. एकवचन में धातु के अन्त में तथा बहुवचन में धातु के प्रथम पुरुष के बहुवचन रूप के अन्त में 'गाक' जोड़ने से आशीर्वादार्थक काल बन जाता है। जैसे महादेव तुमको सुख दे - महादेवुड्डु मीकु सुखमु इच्चुगाक! तुम्हें जय मिले - मीरु जयमु पॉन्दुदुरुगाक!

वे पढ़ें - वारु चदुवुदुरुगाक! तू यशस्वी बने - नीवु यशस्वि अवुगाक।

## प्रश्नार्थक

12. दूसरे से पूछते समय या प्रश्न करते समय क्रियापद के अन्त में दीर्घ 'आ' जोड़ देना चाहिए। जैसे—मीरु चदुवु चुन्नारा? - क्या तुम पढ़ते हो? परन्तु जहाँ 'तुम क्या पढ़ते हो? इस प्रकार पूछना है वहाँ क्रियापद के अन्त में 'आ' जोड़ने की आवश्यकता नहीं। वहाँ क्रिया के पहले 'एमि' पद लगाना चाहिए। तुम क्या पढ़ते हो? मीरु एमि चदुवुचुन्नारु? आप क्या करते हैं? - तमरु एमि चेयुचुन्नारु? तू क्या लिखता है? - नीवु एमि व्रायुचुन्नावु?

क्या आप हमारी बात सुनते हैं? - तमरु मा माठ विनु चुन्नारा? क्या आप घर गये थे? - तमरु इण्टिकि वॅळ्ळियुण्टिरा? क्या तुम एक गाना गाओगी? - मीरु ऑक पाट पाडॅदरा?

## क्त्वार्थक

13. हिन्दी में यह काल धातु के अन्त में 'कर', 'करके' आदि जोड़ने से बनता है। जैसे—जाकर, खाकर, देखकर, सुनकर, लिखकर इत्यादि।

इसी तरह तेलुगु में धातु के 'उ' कार को इकार में बदल देने से पूर्वकालिक (क्त्वार्थक) बन जाता है। जैसे—

वॅळ्लु, वळ्ळि - जाकर

चदुवु, चदिवि - पढ़कर

व्रायु, व्रासि - लिखकर

वच्चु, वच्चि - आकर

तिनु, तिनि - खाकर

कॉट्टु, कॉट्टि - मारकर

चंपु, चंपि - मारकर (जान से)

**सूचना**—तेलुगु की कुछ क्रियाओं के अन्त में 'यु' होता है। उनके साथ भूतकाल और अन्य प्रत्यय जोड़ने पर और ऊपर कहे हुए 'पूर्वकालिक' में 'य' का 'स' हो जाता है। जैसे—चेयु (कर), व्रायु (लिख) का भूत काल :—

| | |
|---|---|
| चेसॅनु | चेसिरि |
| चेसितिवि | चेसितिरि |
| चेसितिनि | चेसितिमि |

और क्त्वार्थक (पूर्वकालिक) में—

चेसि - कर, करके

व्रासि - लिखकर, लिखकरके

## व्यतिरेकार्थक

14. अर्थात् उपर्युक्त पूर्वकालिक का निषेध। जैसे—न पढ़कर, न देखकर, न खाकर इत्यादि। इसमें जिन धातुओं के अन्त में 'इच्चु' है उसका 'इम्प' करके, और अन्य धातुओं के

अन्तिम 'उ' कार को अकार बनाकर उसके अन्त में 'क' जोड़ने से 'व्यतिरेकार्थक' बनता है। जैसे—

| | |
|---|---|
| पोषिंपक - न पोसकर | कॉट्टक - न मारकर |
| वॅळ्ळक - न जाकर | तिनक - न खाकर |
| व्रायक - न लिखकर | चेयक - न करके |

'इच्चु - दे' का 'इव्वक' रूप होगा।

## "तुमुन्नर्थक"

15. हिन्दी में क्रिया के साथ 'को' या 'के लिए' जोड़ने व 'आ' को 'ए' में बदलकर जो रूप बनता है, वैसा तेलुगु में क्रिया पद के अन्त में 'कु' 'कॉरकु' क्रम से जोड़ देने से 'तुमुन्नर्थक' बन जाता है। जैसे—

| | |
|---|---|
| जाना - वॅळ्ळुट, जाने को या | जाने के लिए - वॅळ्ळुट कॉरकु |
| पोवुटकु - जाने को | व्रायुटकु - लिखने को |
| चूचुटकु - देखने को | विनुटकु - सुनने को |
| चेयुटकु - करने को | वच्चुटकु - आने को |
| तिनुटकॉरकु - खाने के लिए | चदुवुटकॉरकु पढ़ने के लिए |
| एड्चुटकॉरकु - रोने के लिए | त्रागुटकॉरकु - पीने के लिए |

परीक्षिंचुटकॉरकु - परीक्षा करने के लिए

## इक्कीसवाँ पाठ—इरुवदिऑकटव पाठमु

# कर्मार्थिक प्रयोग

### (कर्मवाच्य)

16. सकर्मक धातुओं के अन्त में 'बड्डु' धातु के मिलाने से 'कर्मार्थिक' बनता है।

धातु के 'उ' का आकार हो जाता है। पढ़ना - चदुवुट; पढ़ा जाना - चदुवबड्डुट; लिखना - व्रायुट; लिखा जाना - व्रायबड्डुट; खाना - तिनुट; खाया जाना - तिनबड्डुट.

कर्मार्थिक में कर्ता के साथ 'चेत' विभक्ति लगाकर और कर्म का चिह्न लुप्तकर वाक्य बनाना चाहिए। जैसे—मुझसे पुस्तक पढ़ी जाती है - नाचेत पुस्तकमु चदुवबड्डुचुन्नदि. उनसे चिट्ठी लिखी जाएगी - वारिचेत उत्तरमु व्रायबड्डुनु. घोड़े से घास खायी जाती है - गुर्रमुचेत गड्डि तिनबड्डुचुन्नदि.

### "आत्मनेपदार्थक"

17. क्रिया का फल कर्ता को मिलने पर 'आत्मने पदार्थक' होता है। धातु के अन्त में 'कॉनु' धातु जोड़ने से आत्मनेपदार्थक बनता है। 'यु' अन्तवाली क्रिया में 'यु' का 'स' हो जाता है। जैसे—पोषिंचुकॉनुट, चदुवुकॉनुट, व्रासुकॉनुट इत्यादि।

"प्रेरणार्थक"

| | |
|---|---|
| पढ़ना - चदुवुट | पढ़ाना - चदुवु चॅप्पुट |
| देखना - चूचुट | दिखलाना - चूपिंचुट |
| सुनना - विनुट | सुनाना - विनिपिंचुट |
| देना - इच्चुट | दिलाना - इप्पिचुट |
| खाना - तिनुट | खिलाना - तिनिपिंचुट |
| मारना - कॉट्टुट | मरवाना - कॉट्टिंचुट |
| देख - चूडु | दिखाई देना - कनुपिंचुट |
| घुमा - त्रिप्पु | घुमवाना - त्रिप्पिचुट |
| जान - तॅलियु | समझाना - तॅलुपुट |
| डाल - वेयु | डलवाना - वेयिंचुट |
| आना - वच्चु | बुला भेजना - रप्पिचुट |
| खेल - आडु | खेलाना - आडिंचुट |

"अव्यय"

दोनों पदों को मिलाने के लिए जो पद बीच में आता है उसे समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। यु, नु, और—ये अव्यय हैं।

जिन पदों के अन्त में द्रुत 'न्' हो, और उकारान्त, इकारान्त आदि के लिए 'यु' वर्ण लगाना चाहिए। जैसे—"रामुडुनु, सत्यभामयु, हरियु, द्वारककु वच्चिरि - राम, सत्यभामा और हरि द्वारकापुरी को आये।"

"प्रतिपदोक्त अव्यय"

अंता - सब, उतना

अट - (कहते हैं कि) (अनुचुन्नारु का संक्षिप्त रूप है) उदा :—

वारु वच्चुचुन्नारट - कहते हैं कि वे आते हैं

नीवु वॅळ्ळॅद्दवट - कहते हैं कि तू जाएगा।

मीरु पाडॅद्दरट - कहते हैं कि तुम गाओगे।

आयन तम इंटिकि वच्चॅदरट - कहते हैं कि वह आपके घर आवेंगे।

ऍप्पटि - कब का

एल? - कैसे?

ओहो! - ओहो!

ओयि! - अरे! (संबोधन)

कड्डु - ख़ूब, अधिक

कनुक, काबट्टि - इसलिए

कानि - पर, मगर, लेकिन

कावुन - इसलिए

ऍल्ल - सब

अदिगो! - देखो!

इदिगो! - (यह) देखो!

कटकटा - अरे!

कदा (गदा) - न? (आप जाते हैं न? - तामु पोवुचुन्नारु गदा?)

काबोलु - शायद (अनिश्चयार्थक) इसको क्रिया के अन्त में रखना चाहिए; जैसे—वाडु गुण्टूरुकि पोयिनाडु काबोलु - शायद वह गुण्टूर चला गया है।

इक - आगे, पूर्व

तरुवात - बाद, फिर

पिम्मट - बाद, फिर

दाक - तक

अप्पुडु - तब

ऍन्दुकु - क्यों?

मॉदलगुनवि - वग़ैरह, इत्यादि

मरियु - और

| | |
|---|---|
| पिदप - बाद को | अय्यो ! - अरे |
| बॅळ - वाह | बाबु ! - बापरे ! |
| मरिन्नि - और | ऍन्तयु - कितना भी |
| मिक्किल - बहुत | होराहोरी - लगातार |
| ऊरक - चुपचाप | ऍक्कड - कहाँ ? |
| हडावुडी - सरासर | इक्कड - यहाँ |
| इप्पुडु - अब | अक्कड - वहाँ |
| ऍप्पुडु - कब ? | एमि - क्या ? |

## बाईसवाँ पाठ—इरुवदिरॅण्डव पाठमु

## सन्धि-प्रकरण

1. एक पद को दूसरे पद के साथ मिलाने को सन्धि कहते हैं। पहले स्वर को दूसरे स्वर के साथ मिला देने से पर रूप सन्धि होती है। जैसे—रामुडु+अतडु - रामुडतडु.

2. 'अ' के बाद 'इ' या 'ई' आने पर 'यि' 'यी' हो जाता है।—मा+इल्लु (हमारा घर) - मायिल्लु.

3. 'न्' द्रुत अक्षर के बाद स्वर आवे तो वह पर से मिल जाता है। जैसे—चूडन्+अयिति - चूडनयिति (मैं देख नहीं सका); नाकॉरकु+इच्चॅ - नाकॉरकिच्चॅ.

## अकार

4. अकार की सन्धि विकल्प से होती है—मेन+अत्त - मेनत्त (मामी), मेनयत्त.

5. स्त्रीत्वबोधक 'आलु' प्रत्यय आने पर 'रेफ़' का आगम होता है। जैसे—पण्डित+आलु - पण्डितुरालु (पण्डिता), धीर+आलु - धीरुरालु, गॉड्डु+आलु - गॉड्डुरालु (बांझ औरत), पॅद्द+आलु - पॅद्दरालु - बड़ी (श्रेष्ठ) स्त्री.

## इकार

6. मध्यम पुरुष में क्रिया में इकार की सन्धि नित्य होती है। जैसे—एलितिवि+अवनि - एलितिववनि, कॉट्टितिरि+अप्पुडु - कॉट्टितिरप्पुडु.

7. 'एमि' इत्यादि शब्दों के इकार की विकल्प से प्रथम और उत्तम पुरुष में संधि होती है या 'य' का आगम होता है। जैसे—एमि+अनॅनु - एमनॅनु, एमियनॅनु (वह क्या बोला) वच्चिरि+इप्पुडु-वच्चिरिप्पुडु, वच्चिरियिप्पुडु (अब आये), वच्चितिमि+अप्पुडु - वच्चितिमप्पुडु। इसी तरह—मरि (और), अदि, अवि, ऍदि, इवि, एदि, एवि, इवि, एमि इत्यादि के लिए जानिये। इनके सिवाय अन्यान्त संधि नहीं होती। 'य' का आगम होता है—वच्चि+इच्चॅनु - वच्चियिच्चॅनु (आकर दिया); हरि+अतडु-हरियतडु (वह हरि है।) किन्तु, तांटि+आकु - ताटाकु (ताड़ का पत्ता) होगा।

## उकार

8. उकार की नित्य संधि होती है। जैसे—रामुडु+ऍक्कड - रामुडॅक्कड (राम कहाँ है)?

# अभ्यास-वाक्य

## 1. प्रश्नार्थक वाक्य

मीरु ऍवरु, मी इल्लु ऍक्कड ? - तुम कौन हो, तुम्हारा घर कहाँ है ?

मीरु ऍक्कड उण्टुन्नारु (निवसिञ्चुचुन्नारु) ? - तुम कहाँ रहते हो ?

मी उरु एदि ? - आपका गाँव कौन-सा है ?

मी निवासस्थानमु ऍक्कड ? - आपका निवास-स्थान कहाँ है ?

मीदि ए ऊरु ? - आपका कौन गाँव है ?

तमरु नन्नु गुर्तिंचुचुन्नारा ? - क्या आप मुझे पहचानते हैं ?

पोस्टाफीसु ऍक्कड उन्नदि ? - डाक-घर किधर है ?

ना कॉरकु ऍवरु वण्ट चेयुचुन्नारु (चेस्तुन्नारु) ? - मेरा भोजन कौन तैयार करते हैं ? (मेरे लिए कौन रसोई बनाते हैं ?)

इदि ऍट्लुन्नदि ? - यह कैसा है ?

मी उपाध्यायुलु ऍवरु ? - तुम्हारे शिक्षक कौन हैं ?

दीनि वॅल ऍन्त ? - इसकी क़ीमत क्या है ?

मी इल्लु इक्कडनुंडि ऍन्त दूरमु ? - तुम्हारा घर यहाँ से कितनी दूर है ?

अक्कड ऍन्त मन्दि उन्नारु ? - वहाँ कितने लोग हैं ?

आमॅ मी भार्यया ? - क्या वह आपकी स्त्री है ?

ई पाठशालकु कार्यदर्शि ऍवरु ? - इस स्कूल के सेक्रेटरी कौन है ?

वारु बागुगा चदुवुचुन्नारा ? - क्या वे अच्छी तरह पढ़ते हैं ?

मी भार्य पेरु एमि ? - आपकी स्त्री का नाम क्या है ?

तमरु बॉम्बायिकि ऍप्पुडु पोवुदुरु ? - आप बंबई कब जाएँगे ?

वारु (आ महाशयुलु) ऍवरु ? - वे (महाशय) कौन हैं ?

मी इल्लु ऍन्त पॅद्ददि ? - तुम्हारा घर कितना बड़ा है ?

तमरु ए गदिलो निद्रपोवुचुन्नारु ? - आप किस कमरे में सोते हैं ?

मीकु तॅलियुना ? - क्या तुमको मालूम है ?

ई संगति माकु तॅलियदु - यह बात हमें नहीं मालूम ।

मीरु तेलुगुभाष माटलाडगलरा ? - क्या तुम तेलुगु बोल सकते हो ?

वारु एमि अडुगुचुन्नारु ? - वे क्या पूछते हैं ?

तमरु माभाष माटलाडगलरा ? - क्या आप हमारी भाषा बोल सकते हैं ?

आयन जब्बुगा उन्नाडा ? - क्या वह बीमार है ?

आमॅ ऍवतॅ (आमॅ ऍवरु - मर्यादा में) ? - वह (स्त्री) कौन है ?

मीरु पिच्चिवारा ? क्या आप पागल हैं ?

मीरु ना माट विनरा ? - क्या तुम मेरी बात नहीं सुनते ?

इदि मी इल्ला ? - क्या यह तुम्हारा घर है ?

मीरु काफ़ी त्रागुतारा ? - क्या आप काफ़ी पीते हैं ?

वारु दानिनि चदवगलरा ? - वे उसे पढ़ सकते हैं ?

अन्ता सिद्धमुगा उन्नदा ? क्या सब तैयार है ?

वाडु ई रोजुन ऍट्टुलुन्नाडु ? - वह आज कैसा है ?

आयन ऍवरि कॉडुकु ? - वह किसका बेटा है ?

आमॅ ऍवरि कुमार्ते ? - वह किसकी बेटी है ?

मी नौकरु ऍक्कड उन्नाड्डु ? - तुम्हारा नौकर किधर है ?

मीरु ऍन्नि गंटलकु पोतारु ? - तुम कितने बजे जाओगे ?

आयन ऍन्दुकु पोवुचुन्नारु ? - वे क्यों जाते हैं ?

ई इण्टिकि बाडिग (अद्दॅ) ऍन्त ? - इस घर का किराया कितना है ?

स्टेशन इक्कडनुंचि ऍन्त दूरमु ? - स्टेशन यहाँ से कितनी दूर है ?

मी सलहा एमि ? - तुम्हारी क्या सलाह है ?

तम अभिप्रायमु एमि ? - आपकी क्या राय है ?

एमि संगति ?<br>एमि समाचारमु ? } क्या बात है ?

मी वृत्ति एमि ? - आपका धंधा क्या है ?

ई ऊरु पेरु एमि ? - इस गाँव का नाम क्या है ?

मीकु एमि कावलॅनु ? - तुमको क्या चाहिए ?

अदि चवुक दुकाणमा ? - क्या वह सस्ती दुकान है ?

ई इल्लु मी तण्ड्रिगारिदा ? - क्या यह घर तुम्हारे पिता का है ?

आमॅ एवरै उण्डॅनु ? - वह (स्त्री) कौन थी ?

इदि ऍवरिदि ? - यह किसका है ?

आयन ऍवरै उण्डिरि ? - वे कौन थे ?

वाड्डु ऍक्कड उण्डॅनु ? - वह कहाँ था ?

मीरु ऍवरिनि कोरुचुन्नारु ? - तुम किसको चाहते हो ?

ई पुस्तकमु ऍवरिदि ? - यह पुस्तक किसकी है ?

आमॅ ऍक्कडिकि वॅळिलनदि ? - वह किधर गयी ?

मीरु वॅळ्ळगलरा ? - क्या तुम जा सकते हो ?

आयन इक्कड उन्नारा ? - क्या वे यहाँ हैं ?

आमॅ इक्कड उन्नदा ? - क्या वह (स्त्री) यहाँ है ?

इदि मीकु कावलॅना ? - क्या यह तुमको चाहिए ?

वारु अक्कडिकि ऍन्दुकु वॅळ्ळिरि ? - वे उधर क्यों गये ?

आमॅतो ऍवड्डु चॅप्पॅनु ? - उस (स्त्री) से किसने कहा ?

मीरु नाकॉरकु आगॅदरा ? - क्या तुम मेरे लिए ठहरोगे ?

वानिनि वॅळ्ळमनि ऍवड्डु चॅप्पॅनु ? - उससे जाने को किसने कहा ?

वानि आरोग्यमु ऍट्लु उण्डॅनु ? - उसकी तबीयत कैसी थी ?

मीरु अक्कड उन्टिरा ? - क्या तुम वहाँ थे ?

अतड्डु इक्कडिकि ऍन्दुकु वच्चॅनु ? - वह इधर क्यों आया ?

इदि सरिगा उन्नदा ? - क्या यह बराबर है ?

इप्पुड्डु ऍन्दुकु काकूडदु ? - अभी क्यों नहीं ?

अदि ऍन्त वॅडल्पु ? - वह कितना चौड़ा है ?

वारु आ सॉम्मु ऍट्ला चॅल्लिचुदुरु ? - वे वह रक़म कैसे चुकाएँगे ?

वाड्डु नन्नु ऍट्ला कॉट्टिनाड्डु चूडण्डि ? - देखिये, उसने मुझे कैसे मारा ?

नेनु मीतो ऍन्निमारुलु चॅप्पुदुनु ? मैं तुमसे कितनी बार कहूँगा ?

वारु ऍन्दुकु रारु ? - वे क्यों नहीं आते ?

वाड्डु ऍन्दुकु राड्डु ? - वह क्यों नहीं आता ?

आमॅ ऍन्दुकु रादु ? - वह क्यों नहीं आती ?

नीवु ऍवरि पनिवाडवु ? - तू किसका नौकर है ?

मीकु तॅलियदा ? - क्या तुम नहीं जानते ?

दीनि परिणाममु इट्लु अगुननि मीकु तॅलियुना ? - क्या आपको मालूम है कि इसका नतीजा ऐसा होगा ?

रेपु वारु विजयवाडनुंडि वच्चॅदरनि मीरु विन्नारा ? - आपने सुना कि वे कल विजयवाडा से आएँगे ?

तेलुगुलो 'भारती' अनु चक्कनि मास पत्रिक उन्नदि अनि मीरु विनने लेदा ? क्या आपने सुना ही नहीं कि तेलुगु में 'भारती' नामक एक अच्छी मासिक पत्रिका है ?

आन्ध्र देशमन्दु तिरुपतियुनु, श्रीशैलमुनु, मंगलगिरियुनु मंचि पुण्य क्षेत्रमुलनि अन्दरु ऍरुगुदुरु - सबको मालूम है कि आन्ध्र देश में तिरुपति, श्रीशैलम और मंगलगिरि अच्छे पुण्य क्षेत्र हैं ।

तेलुगु कवुललो पोतन्नयॉक्क स्थानमु गॉप्पदनि चालामंदि अन्टारु- बहुत-से लोग कहते हैं कि तेलुगु कवियों में पोतन्ना का स्थान ऊँचा है ।

एनुग अन्त पॅद्ददियुनु, गुर्रमु अन्त चुरुकैनदियुनु, नक्क अन्त जित्तुलमारियुनु, कुक्क अन्त नम्मकमैनदियैन जन्तुवु लेदु- हाथी जैसा बड़ा, घोड़े जैसा फुर्तीला, सियार जैसा चालाक और कुत्ते जैसा विश्वासपात्र जन्तु नहीं है ।

राममूर्ति अन्त वस्तादु, वेमनवंटि योगी, कृष्णदेवरायुलवंटि कवित्व पोषकुडु आन्ध्र देशमन्दु पुट्टने लेदु - राममूर्ति जैसा पहलवान, वेमना जैसा योगी, कृष्णदेवराय जैसा कवित्वपोषक आन्ध्र देश में हुए ही नहीं।

## 2. वर्तमानकाल के अभ्यास-वाक्य

ई मनुष्युलु पोवुचुन्नारु - ये आदमी जाते हैं।

नेनु मंचि नीरु कोरुचुन्नानु - मैं पीने का पानी चाहता हूँ।

दक्षिण देशमुलो चाला मन्दि वेडिनीरु त्रागुदुरु - दक्षिण में बहुत-से लोग गरम पानी पीते हैं।

वारु रेपु राजमहेन्द्रवरमुनकु पोवुचुन्नारु - वे कल राजमहेन्द्री जाते हैं।

वारु इक्कडने उण्टुन्नारु - वे यहीं रहते हैं।

नेनु आयननु ऍरुगुदुनु - मैं उनको जानता हूँ।

नेनु आमॅनु ऍरुगुदुनु - मैं उस (स्त्री) को जानता हूँ।

नेनु पो गोरुचुन्नानु - मैं जाना चाहता हूँ।

मीरु असन्दर्भमुगा ऍन्दुकु माटलाडुचुन्नारु? - तुम बेहूदा क्यों बोलते हो?

तमरु चाला नॅम्मदिगा माटलाडुचुन्नारु - आप बहुत धीरे बोलते हैं।

वीडु ऍल्लप्पुडु आलस्यमुगा वस्तुन्नाडु - यह हमेशा देर से आता है।

सीतम्म पाट पाडुचुन्नदि - सीता गाना गाती है।

नेनु ऍरुगनु - मैं नहीं जानता हूँ।

आमॅ प्रतिदिनमु उदयमुन स्नानमु चेयुनु (चेस्तुन्नदि) - वह प्रतिदिन प्रात:काल स्नान करती है ।

श्रावणमासमुलो तप्पक वान कुरियुनु - श्रावण में आवश्य पानी बरसता है ।

वारु इप्पुडु स्नानमु चेयुचुन्नारु (चेस्तुन्नारु) - वे अब स्नान करते हैं।

वाड्डु बट्टलु उतुकुचुन्नाड्डु - वह कपड़े धोता है ।

वाड्डु वॅळ्ळड्डु - वह नहीं जाता ।

वाड्डु ऍप्पुड्डुनु निजमु चॅप्पड्डु - वह कभी सच नहीं बोलता ।

नेनु रैलु लो वस्तुन्नानु - मैं रेल से आता हूँ ।

वाड्डु प्रतिदिनमु मूड्डु गंटलु चदुवुचुन्नाड्डु - वह रोज़ तीन घंटे पढ़ता है ।

नेनु ना ऊरिकि पोवुचुन्नानु - मैं अपने गाँव जाता हूँ ।

आमॅ भर्त इक्कडकि प्रतिदिनमु वस्तुन्नाड्डु - उसका पति इधर प्रतिदिन आता है ।

मेमु प्रति एड्डु श्रीरंगमुनकु पोवुदुमु - हम हर साल श्रीरंगम् जाते हैं।

प्रतिदिनमु मीरु ऍन्नि गंटलु व्यायाममु चेयुदुरु? - आप प्रतिदिन कितने घंटे कसरत करते हैं?

वाड्डु तन ऊरिकि ऍप्पुड्डुनु पोड्डु - वह अपने गाँव कभी नहीं जाता ।

## 4. भविष्यत्काल के अभ्यास-वाक्य

नेनु ऑण्टरिगा पोयॅदनु - मैं अकेला जाऊँगा ।

वाड्डु कॉन्चॅमु सेपुलो वस्ताड्डु (वच्चुनु) - वह थोड़ी देर में आएगा ।

वारु नाकु सहायमु चेसॅदरु - वे मेरी सहायता करेंगे ।

नेनु रॅण्डु दिनमुल लोपलने वच्चॅदनु - मैं दो दिन के अन्दर ही आऊँगा ।

नेनु मीकु पदि रूपायलु इस्तानु (इच्चॅदनु) - मैं तुमको दस रुपये दूँगा ।

आयन कॉन्नि निमिषमुल्लोने तिरिगि वच्चुनु - वह कुछ ही मिनिटों में लौट आएगा ।

महालक्ष्मि ऍनिमिदि रोजुल लोपुगा ई ऊरु रादु - महालक्ष्मी आठ दिन के भीतर इस गाँव में नहीं आवेगी ।

मीरु शिकारुकि पोतारा ? - क्या आप हवा खाने जाएँगे ?

नीवु ना बट्टलु ऍप्पुडु तीसुकॉनि वच्चॅदवु ? - तू मेरे कपड़े कब लाएगा ?

वारुन्नु मेमुन्नु इप्पुडे बयिलुदेरॅदमु - वे और हम अभी बाहर निकलेंगे।

नेनु रेपु आयनकु जाबु व्रास्तानु (व्रासॅदनु) - मैं कल उसको पत्र लिखूँगा ।

तमरु ऍक्कड बस चेयुदुरु ? - आप कहाँ निवास करेंगे ?

मीरु मळ्ळि ऍप्पुडु वस्तारु (वच्चॅदरु) ? - तुम फिर कब आओगे ?

नीवु एन्त जीतमु तीसुकॉण्टावु (तीसुकॉनॅदवु) ? - तू कितनी तनख़्वाह लेगा ?

तमकु ए मात्रमु पंड्लु कावलॅनु ? - आपको कितने (किस हद तक) फल चाहिए ?

मीरु काशीकि ऍप्पुडु पोतारु ? - तुम काशी कब जाओगे ?

नेनु कूड पोवुदुना (पोना) ? - क्या मैं भी जाऊँ ?

मेमु रेपु उदयमु पोतामु - हम कल सुबह जाएँगे ।

मीरु ई गुड्डकु ऍन्त सॉम्मु तीसकॉण्टारु - तुम इस कपड़े का क्या पैसा लोगे ?

ई धोवतुल जतकु ऍन्त खरीदु ? - इस धोती के जोड़े का क्या दाम है ?

नेनु रानु, ना तल्लि वच्चुनु - मैं नहीं आऊँगा, मेरी माँ आएगी ।

तमरु ऍक्कड उण्टारु ? - आप कहाँ ठहरेंगे ?

नेनु रॅण्डुदिनमुलु बॉम्बायिलो मकामु चेस्तानु - मैं दो दिन बंबई में मुकाम करूँगा ।

एमि, तामु पूनालो दिगरा ? - क्या आप पूना में नहीं उतरेंगे ?

वारु मीतो रेपु एमि चॅप्पुदुरु (चॅप्पुतारु) ? - वे तुमसे कल क्या कहेंगे ?

वाडु तमकु ऑक मंचि पटमु चूपिस्ताडु (चूपिंचुनु) - वह आपको एक अच्छी तस्वीर दिखाएगा ।

नेनु मिम्मुलगुरिंचि आयनतो चॅप्पुतानु - मैं तुम्हारे बारे में उनसे कहूँगा ।

वारु तिरिगि ऍप्पुडु वस्तारु ? - वे वापस कब आएँगे ?

नेनु मीतो अन्नि माटलु चॅप्पॅदनु - मैं आपसे सब बातें कहूँगा ।

मी विवाहमु ऍप्पुडु अगुनु ? - आपकी शादी कब होगी ?

नेनु पण्डु तिननु - मैं फल नहीं खाऊँगा ।

मीरु नाकु जाबु पंपिस्तारा ? - क्या तुम मुझे चिट्ठी भेजोगे ?

मीरु मी सामानु ऍप्पुडु अम्मुतारु ? - तुम अपना असबाब कब बेचोगे ?

नाकु ई पुस्तकमु ऍप्पुडु दॉरुकुनु ? - मुझे यह पुस्तक कब मिलेगी ?

दानिवल्ल एमि लाभमु कलुगुनु ? - उससे क्या फ़ायदा होगा ?

नेनु बयिटिकि पोतानु - मैं बाहर जाऊँगा ।

बाजारुनुंडि कॉन्चॅमु कायकूर तॅच्चि पॅट्टुतारा ? - क्या बाज़ार से कुछ शाक-भाजी ला दोगे ?

वंट ऍप्पुडु सिद्धमगुनु ? - रसोई कब तैयर होगी ?

मेमु ऍल्लुण्डि पट्टणमुनकु पोतामु - हम परसों शहर को जाएँगे ।

नेनु आ गुर्रमुनु नेडु सायंकालामु मीकु चूपिस्तानु - मैं वह घोड़ा आज शाम को तुमको दिखाऊँगा ।

वारु वॅळ्ळि तिरिगि मा इण्टिकि वच्चुटकु निश्चयमु चेस्तारु - वे जाकर फिर हमारे घर आने का निश्चय करेंगे ।

आ दुकाणमुलो (शापुलो) ई पुस्तकमु दॉरुकुनु - उस दूकान में यह पुस्तक मिलेगी ।

मीरु एमि तीसुकॉण्टारु ? - तुम क्या लोगे ?

नेनु मीनुंचि नूरु रूपायिलु अप्पु तीसुकॉनि वानिकि इस्तानु - मैं तुमसे सौ रुपये कर्ज़ लेकर उसको दूँगा ।

मंचिदि, नेनु आयनतो ई संगति चॅप्पुतानु - अच्छा, मैं उससे यह बात कहूँगा ।

नेनु निन्नु ऍप्पुडुनु मरचिपोनु - मैं तुझे कभी नहीं भूलूँगा ।

मेमु इंत इव्वमु - हम इतना नहीं देंगे ।

नेनु मिम्मुलनु अहमदाबादुलो कलुसुकॉण्टानु - मैं आपसे अहमदाबाद में मिलूँगा ।

तमरु नाकु पदि रूपायिलु इस्तारा ? - क्या आप मुझे दस रुपये देंगे ?

मेमु मीकु वाडुक प्रकारमु इस्तामु-हम दस्तूर के मुताबिक तुमको देंगे।

गुर्रमुनु मीवद्दकु पंपिस्तानु - घोड़े को तुम्हारे पास भेजूँगा ।

रावलसिनवाडु वच्चुनु - आनेवाला आएगा ।

वारु ई पनि चेयरु - वे यह काम नहीं करेंगे ।

वारु अक्कडिकि स्वेच्छगा पोतारु - वे वहाँ अपनी मर्ज़ी से जाएँगे ।

आयन रेपु पोवुनु - वह कल जाएगा ।

मीरु पोते नेनुकूडा पोतानु - तुम जाओगे तो मैं भी जाऊँगा ।

देवुनि संकल्पमु उण्टे नेनुकूडा रेपु वस्तानु - ईश्वर की मर्ज़ी हुई तो मैं भी कल आऊँगा ।

नेनु मीकॉरकु अन्ता चेयगलनु - मैं तुम्हारे लिए सब-कुछ कर सकूँगा ।

आमॆ इक्कडिकि मध्यान्हमु वच्चुनु - वह इधर दोपहर को आएगी ।

नेनु ऑक वारमु वरकु ऊरुलो उण्डनु - मैं एक हफ़्ते तक गाँव में न रहूँगा ।

आयन ई पनिनि तप्पक चेयुननि मीरु गट्टिगा नम्मण्डि - आप दृढ़ विश्वास रखिये कि वह यह काम ज़रूर करेंगे ।

मेमु कॉन्नि रोजुल्लोने तिरिगि वच्चेदमु - हम कुछ ही दिन में वापस आएँगे ।

## 4. भूतकाल के अभ्यास-वाक्य

वाडु जब्बुगा उण्डॅनु - वह बीमार था ।

आयन मुन्दु चाला बीदवाडुगा उण्डॅनु - वह पहले बहुत गरीब था ।

नेनु चाला कष्ट स्थितिलो उंटिनि - मैं बहुत मुसीबत में था ।

अतडु नातो कूड उण्डॅनु - वह मेरे साथ था ।

आमॅ चाला अन्दमुगा उण्डॅनु - वह बहुत ख़ूबसूरत थी ।

वाडु अक्कड अप्पुडु उण्डॅना ? - वह उस वक़्त वहाँ था ?

निन्न मीरु इक्कड उण्टिरा ? - क्या तुम यहाँ थे ?

एण्डाकालमुलो वारु इक्कडने उंडिरि - गरमी में वे यहीं थे ।

मीरु अप्पुडु ऍक्कड उण्टिरि - तुम तब कहाँ थे ?

वाडु चाला अदृष्टमुगलवाडुगा उण्डॅनु - वह बड़ा खुश-क़िस्मत (भाग्यवान) था ।

ना पुत्रुडु अमेरिका देशमन्दु उण्डॅनु - मेरा पुत्र अमेरिका में था ।

मेमु गुजरातुलो उण्टिमि - हम गुजरात में थे ।

वाडु अक्कडिकि पोवुचुण्डॅनु - वह उधर जाता था ।

आमॅ ऑक उत्तरमु व्रायुचुण्डॅनु - वह एक चिट्ठी लिखती थी ।

तमरु ऍक्कड उण्टिरि ? - आप कहाँ थे ?

वाडु ऑक बीदवानि कॉडुकु - वह एक ग़रीब आदमी का लड़का था ।

वानि तल्लि चाला बुद्धिमन्तुरालै उण्डॅनु - उसकी माता बड़ी बुद्धिमती थी।

वाड्डु ए इण्टिलो उण्डॅनु? - वह किस घर में था?

आ रोजुन नेनु इंटिलो लेकुंटिनि - उस दिन मैं घर में न था।

नेनु वारिकि याभै रूपायिलु इच्चुचुण्टिनि - मैं उनको पचास रुपये देता था।

वारु ए गदिलो उंडिरि? - वे किस कमरे में थे?

वाड्डु अक्कड लेकुण्डॅनु - वह वहाँ न था।

वानि तल्लि चाला दयगलदिगा उण्डॅनु - उसकी माँ बड़ी मेहर्बान थी।

ना तंड्रिगारु इण्डियन् बैंक लो गुमास्तागा उण्डिरि - मेरे पिताजी इंडियन् बैंक में गुमास्ता थे।

नेनु निन्न इक्कडिकि वच्चितिनि - मैं कल यहाँ आया।

वाड्डु रालेदु - वह नहीं आया।

मीरु अक्कडकु एप्पड्डु चेरितिरि? - तुम वहाँ कब पहुँचे?

वारु आफ़ीसुकु पोयि उन्नारु - वे आफ़ीस चले गये हैं।

मीरु आ पुस्तकमु तॅच्चितिरा? - क्या तुम वह पुस्तक लाये?

वाड्डु जाबु तीसुकॉनि वच्चिउन्नाड्डु - वह चिट्ठी लेकर आया है।

वारु गुर्रमु मीदनुंचि पडिनारु - वे घोड़े पर से गिर पड़े।

आयन नाकु ऑक अरटिपण्डु इच्चॅनु - उसने मुझे एक केला दिया।

मीरु ई तमाशा चूसिनारा? - तुमने यह तमाशा देखा?

आयन तन पनि मुगिंचिनाडु - उसने अपना काम पूरा किया है ।

मीरु आ कागितमुनु ऍन्दुकु चिंपिवेसिनारु ? - तुमने वह काग़ज़ क्यों फाड़ डाला ?

## 5. 'सक' के अभ्यास-वाक्य

### "सक - कल"

मैं यह काम कर सकता हूँ - नेनु ई पनि चेयगलनु ।

हम नहीं कर सकते - मेमु चेय जालमु ।

वे उसको सरकाते हैं - वारु दानिनि कदलिंचुचुन्नारु ।

तुम थोड़ी बहुत अंग्रेज़ी बोल सकते हो ? - मीरु कॉन्चमु इंग्लीषु माटलाडगलरा ?

वह अच्छी तरह तैर सकता है - वाडु बागुगा ईदगलडु ।

वह अब नहीं जा सकती - आमॅ इप्पुडु वॅळ्ळ जालदु ।

कोई भी इस पेटी को उठा नहीं सकता - एवडुन्नु ई पॅट्टॅ ऍत्त जालडु ।

मैं यह भाषा सीख सकूँगा - नेनु ई भाष नेर्चुकॉनगलनु ।

वह इस कर्ज़े को कैसे पटा सकता है ? - वाडु ई अप्पु ऍट्लु तीर्चगलडु ?

वे अब नहीं जा सकते - वारु इप्पुडु वॅळ्ळ जालरु ।

क्या तू तैर नहीं सकता ? - नीवु ईद लेवा ?

क्या आप मेरा पैसा चुका सकते हैं ? - तमरु ना डब्बु चॅल्लिंच-गलरा ?

क्या वे यहाँ आ सकते हैं ? - वारु इक्कडिकि रागलरा ?

तुम्हारे सिवाय मैं और किसका विश्वास कर सकता हूँ? - मिम्मुल तप्प नेनु ऎवरिनि नम्मगलनु?

क्या वे आ सकते हैं? - वारु रा गलरा?

तुमसे जहाँ तक हो सके उसकी सहायता करो - मीचेत अयिन मट्टुकु वानिकि सहायमु चेयुमु।

हम उसे न कर सके - मेमु दानिनि चेयलेक पोतिमि। [गलनु।

मैं यह भाषा जल्दी सीख सकूँगा - नेनु ई भाष त्वरगा नेर्चुकॉन-

वह वहाँ नहीं जा सकती - आमॅ अक्कडिकि पोजालदु।

मैं आपका निमन्त्रण स्वीकार नहीं कर सकता - नेनु मी आह्वानमुनु अन्गीकरिम्प लेनु।

इस रीति से हम सौ रुपये कमा सकते हैं - ई रीतिगा मेमु नूरु रूपायिलु संपादिंच गलमु।

कौन कह सकता है कि कल क्या होगा? - रेपु एमि अगुनो, एवरु चॅप्प गलरु?

वह नहीं पढ़ सकता - वाड्डु चदुवलेडु।

मैं उसे नहीं कर सकता - नेनु दानिनि चेयलेनु।

क्या तुम यह पत्थर उठा सकते हो? - मीरु ई रातिनि एत्तगलरा?

## 6. देना और लगना के कुछ उदाहरण

हमको जाने दो - मम्मुलनु वॅळ्ळनीयुमु (पोनिम्मु).

तुम उनको नहीं जाने देते - मीरु वारिनि वॅळ्ळनिच्चुट लेदु (पोनिच्चुट लेदु).

मेरे पिता ने मुझसे कहा कि मैं तुमको नहीं पढ़ने दूँगा - ना तण्ड्रि निन्नु चदुव निव्वनु अनि चॅप्पॅनु.

मैं उसको मारने लगा - नेनु वानिनि कॉट्टनारंभिचितिनि (कॉट्ट सागितिनि).

मैंने चाहा कि उनको इस काग़ज़ पर लिखने दूँ - ई कागितमुमीद वारिनि व्रायनिद्दामनुकुन्नानु.

## 7. जीवजन्तुओं की बोलियाँ

घोड़ा हिनहिनाता है - गुर्रमु सकिलिंचुचुन्नदि (सकिलिंचुनु).

कुत्ता भोंकता है - कुक्क मॉरुगुचुन्नदि (मॉरुगुनु).

यह कुत्ता क्यों भोंकता है? - ई कुक्क ऍन्दुकु मॉरुगुचुन्नदि?

गाय रंभाती है - आवु अंबा अनि अरचुनु.

कौआ कां-कां करता है - काकि का-का अनि अरचुनु.

मोर कैसा सुंदर बोलता है? - नॅमिलि ऍन्त अंदमुगा केकवेयुनु?

बिल्ली म्याऊँ-म्याऊँ करती है - पिल्लि म्याव्-म्याव् अनि अरचुचुन्नदि.

जंगल में गीदड़ रोता है - अडविलो नक्क ऊल पॅट्टुचुन्नदि.

शेर गरजता है - सिंहमु गर्जिंचुचुन्नदि.

गधा रेंकता है - गाडिद ऑड्रु पॅट्टुचुन्नदि.

हाथी चिंघाड़ता है - एनुग गी पॅट्टुचुन्नदि.

## 8. आरोग्य संबन्धी कुछ वाक्य

प्रस्तुतमु तम आरोग्यमु बागुगा उन्नदा? - आजकल आपकी तबीयत अच्छी है?

कॉन्चॅमु बागाने उन्नदि - कुछ अच्छी ही है ।

मीरु मन्दु तीसुकॉनुचुन्नारा ? - क्या तुम दवा लेते हो ?

अवुनु, नेनु मन्दु कॉन्चॅमु तीसुकॉन्टूने उन्नानु - हाँ, मैं दवा कुछ तो लेता ही हूँ ।

मंचि वैद्युनि दग्गिर मन्दु तीसुकॉण्डि, इदि चाला अवसरमु - आप अच्छे वैद्य के पास दवा लीजिये, यह बहुत आवश्यक है ।

निन्नटिनुंडि ऍक्कुवगा रॉम्प (जलुबु) चेसिनदि - कल से खूब जुकाम हुआ है ।

मीरु एन्नाळ्ळनुंडि जब्बुगा उन्नारु ? - तुम कितने दिन से बीमार हो ?

सुमारु पदि दिनमुल नुंडि - लगभग दस दिन से ।

तलनॉप्पिगा उन्नदि - सर में दर्द है ।

बयपडकंडि, कॉन्चमु विश्रांति तीसुकॉण्डि - मत डरिये, कुछ आराम कीजिये ।

मन्दु ऍक्कड उन्नदि ? - दवा कहाँ पर रखी है ?

रात्रिलो निद्रकूड नाकु बागा पट्टलेदु - रात में नींद भी मुझे अच्छी तरह नहीं आयी ।

मी कुमारुडु कुलासागा उन्नाडा ? - आपका बेटा अच्छा है ?

## 9. लेन-देन के बारे में कुछ वाक्य

तमरु माकु रूपायिलु अप्पुगा इस्तारा ? - क्या आप हमें रुपया उधार देंगे ?

मीकु ऍन्नि रूपायिलु कावलसियुन्नवि? - तुमको कितने रुपये चाहिए?

नूरु रुपायिलु कावलॅनु - सौ रुपया चाहिए।

नेनु इन्त इव्वलेनु, याभै इव्वगलनु - मैं इतना नहीं दे सकता, पचास दे सकता हूँ।

तमरु ई रूपायिलु ऍन्नि दिनमुललो तीर्चुकुण्टारु? - आप यह रुपया कितने दिन में चुकाएँगे?

नालुगु मासमुललोपल तीर्चुकुण्टानु - चार महीने के अंदर पटा दूँगा।

तमरु तम रुपायिलु ब्यांकुलो ऍन्दुकु जम चेयरु? - आप अपना रुपया बैंक में क्यों जमा नहीं करते?

मा सॉम्मु मीरु ऍप्पुडु तिरिगि इस्तारु? - हमारा रुपया तुम कब वापस करोगे?

मीरु कोरिनप्पुडे इस्तानु - जब आप चाहेंगे तब दूँगा।

मीकु रूपायिलु एन्दुकु कावलॅनु? - तुमको रुपया किसलिए चाहिए?

कॉन्चॅमु अवसरमैन पनिकि कावलॅनु - कुछ ज़रूरी काम के लिए चाहिए।

मीरु ऍल्लप्पुडु मा दग्गर रूपायिलु अडुगुटकु वस्तुन्नारु - तुम हमेशा हमारे पास रुपया माँगने आया करते हो।

मीरु सम्पादिंचिन इन्त सॉम्मु ऍक्कडकु पोयिनदि? - तुमने इतना रुपया कमाया सो कहाँ गया?

## 10. भोजन सम्बन्धी वाक्य

मैं बहुत भूखा हूँ - नेनु चाला आकलिगा उन्नानु.

मुझे भूख लगी है - नाकु आकलि वेसिनदि.

मुझे सुबह कुछ खाने को दीजिये - नाकु प्रातःकालमुन कॉन्चॅमु तिनुटकु इव्वण्डि.

आज मुझे भूख नहीं है - नेडु नाकु आकलि लेदु.

मैं सबेरे दूध और रोटी खाता हूँ - नेनु उदयमु पालु रॉट्टॆ तिण्टुन्नानु.

आप भोजन कितने बजे करते हैं? - मीरु ऍन्नि गंटलकु भोजनमु चेस्तुन्नारु?

आइये, रसोई तैयार है - रण्डि, वंट सिद्धमुगा उन्नदि.

इन आलुओं को उबाल डालो - ई बंगला दुंपलनु उडक पॅट्टुमु.

आज आपने क्या भोजन किया? - नेडु मीरु एमि भोजनमु चेसितिरि?

ग्वालिन दही लायी है - गॉल्लदि पॅरुगु तीसुकॉनि वच्चिनदि.

गिलास-भर ठंडा पानी लाओ - ग्लासुनिंडा चल्लनि नीरु तीसुकॉनि रण्डि.

इस थाली को साफ़ कर डालो - ई पळ्ळॆमु शुभ्रमु चेयुमु.

वहाँ चलिये, थोड़ा-सा जलपान करेंगे - अक्कडिकि पदंडि, कॉञ्चॆमु फलाहारमु चेद्दामु.

आप हमारे घर भोजन करने के लिए पधारिये - नेड्डु तमरु मा इण्टिकि भोजनानिकि दयचेयवलॅनु.

## 11. मुसाफ़िरी के बारे में कुछ वाक्य

मैं स्टेशन जाता हूँ - नेनु स्टेषनुकु पोवुचुन्नानु.

एक प्लैटफारम-टिकट दीजिये - ऑक प्लाटफारमु टिक्कट्टु इव्वंडि.

कितना पैसा देना चाहिए? - ऍन्त डब्बु इव्ववलॅनु?

हमारा असबाब तौलिये - मा सामानु तूचण्डि.

हमें अपना सामान लगेज कराना है - मेमु मा सामानु लगेज चेयिंचुकॉनवलसियुन्नदि.

वह कितना पैसा माँगता है? - वाड्डु ऍन्त डब्बु अडुगुचुन्नाड्डु?

बंबई की गाड़ी कितने बजे छूटती है? - बॉम्बायि बंडि एन्नि गंटलकु बयलुदेरुनु?

गाड़ी छूटने में कितनी देरी है? - बण्डि बयलुदेरुटकु इंका ऍन्त टैमु उन्नदि?

यहाँ गाड़ी कितनी देर तक ठहरती है? - इक्कड बण्डि ऍन्तसेपु आगुनु?

तुम्हारा टिकट कहाँ का है? - मी टिक्कट्टु ऍक्कडिकि?

यह गाड़ी वाल्टेर कब पहुँचेगी? - ई बंडि वाल्टेरुकु ऍप्पुड्डु चेरुनु?

मेहरबानी करके कुछ जगह दीजिये - दयचेसि कॉञ्चमु चोट्टु इव्वण्डि.

आज गाड़ी बहुत देर से आयी - नेड्डु बण्डि चाला आलस्यमुगा वच्चिनदि.

हम यहाँ दो दिन ठहरेंगे - मेमु इक्कड रॅण्डु दिनमुलु आगॅदमु.

काशी का रेल-किराया क्या है? - काशीकि रैलु किरायि ऍन्त?

आपको कहाँ जाना है? - मीरु ऍक्कडकि पोवलसियुन्नदि?

## कुछ उपयोगी वस्तुएँ

### 1. वस्त्र

कुर्ता - चॉक्का

कमीज़ - कमीजु

कोट - कोट्टु

धोती - धोवति, पंच

दुपट्टा - उत्तरीयमु

पायजामा - लागु

लँगोट - लंगोटी

पतलून - पंट्लांगु

रूमाल - रुमालु

साफ़ा - तलगुड्ड

पगड़ी - तलपाग

फेंटा - लागु

तौलिया, गमछा - अंगवस्त्रमु

बनियान - बनियनु

पीताम्बर - पट्टुबट्ट, पट्टुवस्त्रमु

साड़ी - चीर

चोली - रविॅक

बटन, घुंडी - गुंडी

### 2. भोजन-पदार्थ

दाल - पप्पु

भात - अन्नमु

कढ़ी - पुलुसु

चावल - बिय्यमु

उड़द की दाल - मिनुप पप्पु

चने की दाल - सॅनग पप्पु

अरहर - कंदि

मूँग - पॅसलु

अरहर की दाल - कंदिपप्पु
मूँग की दाल - पॅसरुपप्पु
तिल - नु्वुलु
जौ - यवलु
गेहूँ का आटा - गोधुमपिंडि
नमक - उप्पु
मिर्चा - मिरपकाय
काली मिर्च - मिरियालु
अजवायन - वामु
सोंठ - सॉठि
धनिया - धनियालु
जीरा - जीलकर्रा
हींग - इंगुव
सेंधा नमक - सैंधव लवणमु
मेथी - मॅन्तुलु
राई - आवालु
हल्दी - पसुपु
मैदा - मैदापिंडि
तेल - नूनॅ
साबूदाना - सग्गुबिय्यमु
उड़द - मिनुमुलु

धान - धान्यमु
मठ्ठा - मज्जिग
घी - नॅय्यि
मक्खन - वॅन्न
शक्कर - चक्कॅर, पंचदार
दही - पॅरुगु
दूध - पालु
मलाई - मीगड
गोझा, गुझिया - कज्जिकाय
खीर - परमान्नमु, पायसमु
दही बड़ा - आवडलु
बड़ा - गारॅलु
आम का अचार - मामिडि ऊरगाय
अचार - ऊरगाय
चटनी - पच्चडि
रायता - पॅरुगुपच्चडि
लौंजी - मागाय
शर्बत - पानकमु
पापड़ - अप्पडमु

इमली का रस - चारु
पुआ - अरिसॅलु
पूरनपूरी - बॉब्बट्लु
नाश्ता - फलाहारमु
भोजन - भोजनमु
मिठाई - मिठायि

## 3. फल और मेवा

आम - मामिडिपंडु
केरी - मामिडिकाय
नारियल - कॉब्बरिकाय
गरी - कॉब्बरि
खर्जूर - खर्जूरमु
किसमिस - किसमिसपंडु
बादाम - बादंकाय
छुहारा - खर्जूरपुकाय
चिरौंजी - सारपप्पु
अंगूर - पच्चिद्राक्षपंडु
अमरूद - जामपंडु
काजू - जीडिपप्पु
मूँगफली - वेरुसॅनक्काय
ताड़ का फल - ताटि पंडु
नींबू - निम्मकाय
नारंगी - नारिंजफलमु
सेब - सीम रेगिपंडु
केला - अरटिपंडु
अनार - दानिम्मपंडु
नास्पाती - बेरिकाय
अंजीर - अत्तिपंडु
बेर - रेगिपंडु

## 4. शाक-भाजी

आलू - बंगाळांदुपलु
बैंगन - वंकाय
चचिंड़ा - पॉट्लकाय
सेम - चिक्कुडुकाय
अरुई - चामदुंपलु
भिंडी - बॅण्डकाय
तुरई - बीरकाय
करेला - काकरकाय

भाजी - तोटकूर

करौंदा - वाक्काय

हरी मिर्च - पच्चिमिरपकाय

ककड़ी - दोसकाय

कोथमीर, हरा धनिया-कॉत्तिमिरि

रताळू - पेण्डलमु

## 5. धातु

सोना - बंगारमु

पीतल - इत्तडि

तांबा - रागि

चाँदी - वॅण्डि

कांसा - कंचु

लोहा - इनुमु

## 6. संख्या

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ౧ | ౨ | ౩ | ౪ | ౫ | ౬ | ౭ | ౮ | ౯ | ౧౦ |

1 ऑकटि

2 रॅण्डु

3 मूडु

4 नालुगु

5 ऐदु

6 आरु

7 एडु

8 एनिमिदि

9 तॉम्मिदि

10 पदि

11 पदकॉण्डु

12 पण्ड्रॅण्डु

13 पदुमूडु

14 पदुनालुगु

15 पदुनैदु

16 पदुनारु

17 पदिहेड्डु
18 पद्देनिमिदि
19 पंत्तॉम्मदि
20 इरुवदि
30 मुप्पदि
40 नलुवदि
50 याभै, एवदि

60 अरुवदि
70 डॅळ्वदि
80 एनबदि
90 तॉम्बदि
100 नूरु, वंद
हज़ार - वॅय्यि
लाख - लक्ष
करोड़ - कोटि

सवा - पावु
साढ़े - अर (न्नर)
पौने - पावुतक्कव
डेढ़ - ऑकटिन्नर

सवा दो - रॅण्डुंपावु
सवा चार - नालुंगुंपावु
पौने तीन - पावुतक्कुव मूड्डु
पौने दस - पावुतक्कुव पदि
साढ़े सात - एड्डुन्नर

आना - अणा
रुपया - रूपायि
मुहर - मुद्र
उधार - अप्पु
ब्याज - बड्डी

**सूचना :**—बीस (20) संख्या के बाद तीस तक और तीस, चालीस इसी तरह सौ तक के बीच में ऑकटि, रॅण्डु, मूड्डु आदि पूरक संख्या जोड़ लेनी चाहिए।

# परिशिष्ट

## अक्षर-परिचय

### पहला अभ्यास—मॉदटि अभ्यासमु

तेलुगु भाषा में 57 अक्षर हैं।

अच्चुलु—स्वर 16

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| అ | ఆ | ఇ | ఈ | ఉ | ఊ |
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ |
| ఋ | ౠ | ఌ | ౡ | ఎ | ఏ |
| ऋ | ॠ | ऌ | ॡ | ऍ (ह्रस्व) | ए (दीर्घ) |
| | ఐ | ఒ | ఓ | ఔ | |
| | ऐ | ऑ (ह्रस्व) | ओ | औ | |

| | | |
|---|---|---|
| అం | అః | ये दोनों अक्षर प्रणाक्षर हैं। |
| अं | अः | इनको स्वरों में नहीं लिया जाता है। |

'०' यह पूर्णानुस्वार है। 'ċ' यह अर्धानुस्वार है। इसे तुलुगु में 'अरसुन्न' कहते हैं।

'ए' और 'ओ' के ह्रस्व और दीर्घ दो प्रकार के उच्चारण होते हैं। पहला 'ऍ' और 'ऑ' ह्रस्व अर्थात् जरा-सा झटका देकर उच्चारण करना चाहिए और दूसरे को पूर्ण दीर्घ। तेलुगु में इन दोनों का जगह-जगह पर बहुत इस्तेमाल होता है। आगे यह अच्छी तरह समझ में आ जाएगा।

## दूसरा अभ्यास—रॆण्डव अभ्यासमु

### हल्लुलु—व्यंजन 38

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | క | ఖ | గ | ఘ | | ఙ |
| कवर्ग— | क | ख | ग | घ | | ङ |
| | చ | ఛ | జ | ఝ | | ఞ |
| चवर्ग— | च | छ | ज | झ | | ञ |
| | ట | ఠ | డ | ఢ | | ణ |
| टवर्ग— | ट | ठ | ड | ढ | | ण |
| | త | థ | ద | ధ | | న |
| तवर्ग— | त | थ | द | ध | | न |
| | ప | ఫ | బ | భ | | మ |
| पवर्ग— | प | फ | ब | भ | | म |
| | య | ర | ఱ | ల | ళ | వ |
| अन्तःस्थ— | य | र | ऱ | ल | ळ | व |
| | శ | ష | స | హ | | |
| ऊष्म— | श | ष | स | ह | | |
| | | క్ష | త్ర | జ్ఞ | | |
| | | क्ष | त्र | ज्ञ | | |

## स्वरचिह्न—अच्चुल गुर्तुलु

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| అ | ✓ | तलकट्टु | अ | ० |
| ఆ | ా | दीर्घमु | आ | ा |
| ఇ | ి | गुडि | इ | ि |
| ఈ | ీ | गुडिदीर्घमु | ई | ी |
| ఉ | ు | कॉम्मु | उ | ु |
| ఊ | ూ | कॉम्मुदीर्घमु | ऊ | ू |
| ఋ | ృ | सुडि | ऋ | ृ |
| ౠ | ౄ | सुडिदीर्घमु | ॠ | ॄ |
| ఎ | ె | ऍत्वमु (ह्रस्व) | ऍ | ॆ |
| ఏ | ే | एत्वमु (दीर्घ) | ए | े |
| ఐ | ై | ऐत्वमु | ऐ | ै |
| ఒ | ొ | ऑत्वमु (ह्रस्व) | ऑ | ॉ |
| ఓ | ో | ओत्वमु (दीर्घ) | ओ | ो |
| ఔ | ౌ | औत्वमु | औ | ौ |

క కా కి కీ కు కూ కృ కౄ

కె కే కై కొ కో కౌ కం కః

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क् | क | का | कि | की | कु | कू | कृ | कॄ |
| క్ | క | కా | కి | కీ | కు | కూ | కృ | కౄ |
| कॅ(ह्रस्व) | के(दीर्घ) | कै | कॉ(ह्रस्व) | को(दीर्घ) | कौ | कं | कः | |
| కె | కే | కై | కొ | కో | కౌ | కం | కః | |
| च् | च | चा | चि | ची | चु | चू | चृ | चॄ |
| చ్ | చ | చా | చి | చీ | చు | చూ | చృ | చౄ |
| चॅ | चे | चै | चॉ | चो | चौ | चं | चः | |
| చె | చే | చై | చొ | చో | చౌ | చం | చః | |
| ट् | ट | टा | टि | टी | टु | टू | टृ | टॄ |
| ట్ | ట | టా | టి | టీ | టు | టూ | టృ | టౄ |
| टॅ | टे | टै | टॉ | टो | टौ | टं | टः | |
| టె | టే | టై | టొ | టో | టౌ | టం | టః | |
| प् | प | पा | पि | पी | पु | पू | पृ | पॄ |
| ప్ | ప | పా | పి | పీ | పు | పూ | పృ | పౄ |
| पॅ | पे | पै | पॉ | पो | पौ | पं | पः | |
| పె | పే | పై | పొ | పో | పౌ | పం | పః | |

त् त ता ति ती तु तू तृ तॄ
త్ త తా తి తీ తు తూ తృ తౄ

तॅ ते तै तॉ तो तौ तं तः
తె తే తై తొ తో తౌ తం తః

र् र रा रि री रु रू
ర్ ర రా రి రీ రు రూ

रॅ रे रै रॉ रो रौ रं रः
రె రే రై రొ రో రౌ రం రః

ह् ह हा हि ही हु हू हृ हॄ
హ్ హ హా హి హీ హు హూ హృ హౄ

हॅ हे है हॉ हो हौ हं हः
హె హే హై హొ హో హౌ హం హః

మొ मॊ
మో मो
యొ यॊ
యో यो

వు वु
వూ वू

---

DAKSHINA BHARAT HINDI PRACHAR SABHA, MADRAS

TELUGU SWAYAMSIKSHAK

Price 75 nP.

# तेलुगु स्वयंशिक्षक

प्रकाशक

क्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा

मद्रास